قرآن مجید

लफ़्ज़ी तरजुमा

قَالَ الْمَلَاُ

पारा - 9

eParah

يٰشُعَيْبُ	لَنُخْرِجَنَّكَ	مِنْ قَوْمِهٖ	اسْتَكْبَرُوْا	الَّذِيْنَ	الْمَلَاُ	قَالَ
ऐ शुऐब	अलबत्ता हम ज़रूर निकाल देंगे तुझे	उसकी क़ौम में से	तकब्बुर किया	जिन्होंने	सरदारों ने	कहा

فِيْ مِلَّتِنَا ؕ	لَتَعُوْدُنَّ	اَوْ	مِنْ قَرْيَتِنَآ	مَعَكَ	اٰمَنُوْا	وَالَّذِيْنَ
हमारी मिल्लत में	अलबत्ता तुम ज़रूर पलटोगे	या	अपनी बस्ती से	साथ तेरे	ईमान लाए हैं	और उन्हें जो

كَذِبًا	عَلَى اللّٰهِ	افْتَرَيْنَا	قَدِ	كٰرِهِيْنَ ۚ﴿88﴾ قف	كُنَّا	اَوَلَوْ	قَالَ
झूठ	अल्लाह पर	गढ़ लिया हमने	तहक़ीक़	नापसंद करने वाले	हों हम	क्या भला अगरचे	उसने कहा

وَمَا	مِنْهَا ؕ	اللّٰهُ	نَجّٰنَا	اِذْ	بَعْدَ	فِيْ مِلَّتِكُمْ	عُدْنَا	اِنْ
और नहीं	उससे	अल्लाह ने	निजात दी हमें	जब	बाद इसके	तुम्हारी मिल्लत में	पलटे हम	अगर

رَبُّنَا ؕ	اللّٰهُ	يَّشَآءَ	اَنْ	اِلَّآ	فِيْهَآ	نَّعُوْدَ	اَنْ	لَنَآ	يَكُوْنُ
जो रब है हमारा	अल्लाह	चाहे	ये कि	मगर	उसमें	हम पलटें	कि	हमारे लिए	है (जायज़)

رَبَّنَا	تَوَكَّلْنَا ؕ	عَلَى اللّٰهِ	عِلْمًا ؕ	شَيْءٍ	كُلَّ	رَبُّنَا	وَسِعَ
ऐ हमारे रब	तवक्कुल किया हमने	अल्लाह ही पर	इल्म के ऐतबार से	चीज़ को	हर	हमारे रब ने	घेर रखा है

الْفٰتِحِيْنَ ﴿89﴾	خَيْرُ	وَاَنْتَ	بِالْحَقِّ	قَوْمِنَا	وَبَيْنَ	بَيْنَنَا	افْتَحْ
सब फ़ैसला करने वालों से	बेहतर है	और तू	साथ हक़ के	हमारी क़ौम के	और दर्मियान	दर्मियान हमारे	फ़ैसला करदे

شُعَيْبًا	اتَّبَعْتُمْ	لَئِنِ	مِنْ قَوْمِهٖ	كَفَرُوْا	الَّذِيْنَ	الْمَلَاُ	وَقَالَ
शुऐब की	पैरवी की तुमने	अलबत्ता अगर	उसकी क़ौम में से	कुफ़्र किया	जिन्होंने	सरदारों ने	और कहा

فَاَصْبَحُوْا	الرَّجْفَةُ	فَاَخَذَتْهُمُ	لَّخٰسِرُوْنَ ﴿90﴾	اِذًا	اِنَّكُمْ
तो उन्होंने सुबह की	ज़लज़ले ने	पस पकड़ लिया उन्हें	अलबत्ता ख़सारा पाने वाले हो	तब	बेशक तुम

لَّمْ	كَاَنْ	شُعَيْبًا	كَذَّبُوْا	الَّذِيْنَ	جٰثِمِيْنَ ۚ﴿91﴾	فِيْ دَارِهِمْ
ना	गोया कि	शुऐब को	झुठलाया	वो जिन्होंने	औंधे मुंह	अपने घरों में

ركوع 4

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

يَغْنَوْا	فِيْهَا ؕ	اَلَّذِيْنَ	كَذَّبُوْا	شُعَيْبًا	كَانُوْا	هُمُ	الْخٰسِرِيْنَ ﴿92﴾
वो बसे थे	उनमें	वो जिन्होंने	झुठलाया	शुऐब को	थे	वो ही	ख़सारा पाने वाले

فَتَوَلّٰى	عَنْهُمْ	وَقَالَ	يٰقَوْمِ	لَقَدْ	اَبْلَغْتُكُمْ	رِسٰلٰتِ
तो उसने मुंह फेर लिया	उनसे	और कहा	ऐ मेरी क़ौम	अलबत्ता तहक़ीक़	पहुंचा दिए मेंने तुम्हें	पैग़ामात

رَبِّيْ	وَنَصَحْتُ	لَكُمْ ۚ	فَكَيْفَ	اٰسٰى	عَلٰى قَوْمٍ	كٰفِرِيْنَ ﴿93﴾ ع
अपने रब के	और ख़ैरख़्वाही की मेंने	तुम्हारी	तो क्यों कर	मैं अफ़सोस करूं	ऐसे लोगों पर	जो काफ़िर हैं

ع 11 9 1

وَمَآ	اَرْسَلْنَا	فِيْ قَرْيَةٍ	مِّنْ نَّبِيٍّ	اِلَّآ	اَخَذْنَآ	اَهْلَهَا	بِالْبَاْسَآءِ
और नहीं	भेजा हमने	किसी बस्ती में	कोई नबी	मगर	पकड़ लिया हमने	उसके रहने वालों को	साथ सख़्ती

وَالضَّرَّآءِ	لَعَلَّهُمْ	يَضَّرَّعُوْنَ ﴿94﴾	ثُمَّ	بَدَّلْنَا	مَكَانَ	السَّيِّئَةِ	
और तकलीफ़ के	ताकि वो	वो गिड़ गिड़ाऐं/आजिज़ी करें	फिर	बदला दिया हमने	जगह	बुराई के	

الْحَسَنَةَ	حَتّٰى	عَفَوْا	وَّقَالُوْا	قَدْ	مَسَّ	اٰبَآءَنَا	الضَّرَّآءُ
भलाई को	यहां तक कि	वो ज़्यादा हो गए	और वो कहने लगे	तहक़ीक़	पहुंची थी	हमारे आबा ओ अजदाद को भी	तकलीफ़

وَالسَّرَّآءُ	فَاَخَذْنٰهُمْ	بَغْتَةً	وَّهُمْ	لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿95﴾	وَلَوْ	اَنَّ	
और ख़ुशी	तो पकड़ लिया हमने उन्हें	अचानक	और वो	वो शऊर ना रखते थे	और अगर	बेशक	

اَهْلَ الْقُرٰٓى	اٰمَنُوْا	وَاتَّقَوْا	لَفَتَحْنَا	عَلَيْهِمْ	بَرَكٰتٍ
बस्तियों वाले	ईमान ले आते	और तक़वा करते	अलबत्ता खोल देते हम	उन पर	बरकतें

مِّنَ السَّمَآءِ	وَالْاَرْضِ	وَلٰكِنْ	كَذَّبُوْا	فَاَخَذْنٰهُمْ	بِمَا	كَانُوْا
आसमान से	और ज़मीन से	और लेकिन	उन्होंने झुठलाया	तो पकड़ लिया हमने उन्हें	बवजह उसके जो	थे वो

يَكْسِبُوْنَ ﴿96﴾	اَفَاَمِنَ	اَهْلُ الْقُرٰٓى	اَنْ	يَّاْتِيَهُمْ	بَاْسُنَا	بَيَاتًا
वो कमाई करते	क्या भला बेख़ौफ़ हो गए	बस्तियों वाले	कि	आ जाए उन पर	अज़ाब हमारा	रात को

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَّهُمْ	نَآئِمُوْنَ ﴿97﴾	اَوَ	اَمِنَ	اَهْلُ الْقُرٰٓى	اَنْ	يَّاْتِيَهُمْ
और वो	सो रहे हों	या क्या	बेख़ौफ़ हो गए	बस्तियों वाले	कि	आजाए उन पर

بَاْسُنَا	ضُحًى	وَّهُمْ	يَلْعَبُوْنَ ﴿98﴾	اَفَاَمِنُوْا	مَكْرَ اللّٰهِ ۚ	فَلَا
अज़ाब हमारा	चाश्त के वक़्त	और वो	वो खेलते हों	क्या भला वो बेख़ौफ़ हो गए	अल्लाह की तदबीर से	पस नहीं

ع 12 6 2

يَاْمَنُ	مَكْرَ اللّٰهِ	اِلَّا	الْقَوْمُ	الْخٰسِرُوْنَ ﴿99﴾ ع	اَوَ لَمْ	يَهْدِ
बेख़ौफ़ हुआ करते	अल्लाह की तदबीर से	मगर	वो लोग	जो ख़सारा पाने वाले हैं	क्या भला नहीं	रहनुमाई की

لِلَّذِيْنَ	يَرِثُوْنَ	الْاَرْضَ	مِنْۢ بَعْدِ	اَهْلِهَآ	اَنْ	لَّوْ	نَشَآءُ
उन लोगों की जो	वारिस बनते हैं	ज़मीन के	बाद	उसके रहने वालों के	(इस बात ने) कि	अगर	हम चाहें

اَصَبْنٰهُمْ	بِذُنُوْبِهِمْ ۚ	وَنَطْبَعُ	عَلٰى قُلُوْبِهِمْ	فَهُمْ	لَا يَسْمَعُوْنَ ﴿100﴾
पकड़ लें हम उन्हें	बवजह उनके गुनाहों के	और हम मोहर लगा दें	उनके दिलों पर	फिर वो	ना वो सुनें

تِلْكَ	الْقُرٰى	نَقُصُّ	عَلَيْكَ	مِنْ اَنْۢبَآئِهَا ۚ	وَلَقَدْ	جَآءَتْهُمْ
ये	बस्तियां हैं	हम बयान कर रहे हैं	आप पर	उनकी ख़बरों मैं से	और अलबत्ता तहक़ीक़	आए उनके पास

رُسُلُهُمْ	بِالْبَيِّنٰتِ ۚ	فَمَا	كَانُوْا	لِيُؤْمِنُوْا	بِمَا	كَذَّبُوْا
रसूल उनके	साथ खुली निशानियों के	पस ना	थे वो	कि वो ईमान लाते	बवजह उसके जो	उन्होंने झुठलाया

مِنْ قَبْلُ ؕ	كَذٰلِكَ	يَطْبَعُ	اللّٰهُ	عَلٰى قُلُوْبِ	الْكٰفِرِيْنَ ﴿101﴾	وَمَا
उससे पहले	इसी तरह	मोहर लगा देता है	अल्लाह	दिलों पर	काफ़िरों के	और नहीं

وَجَدْنَا	لِاَكْثَرِهِمْ	مِّنْ عَهْدٍ ۚ	وَاِنْ	وَّجَدْنَآ	اَكْثَرَهُمْ
पाया हमने	उनकी अक्सरियत के लिए	कोई अहद	और बेशक	पाया हमने	उनकी अक्सरियत को

لَفٰسِقِيْنَ ﴿102﴾	ثُمَّ	بَعَثْنَا	مِنْۢ بَعْدِهِمْ	مُّوْسٰى	بِاٰيٰتِنَآ	اِلٰى
अलबत्ता फ़ासिक़	फिर	भेजा हमने	बाद उनके	मूसा को	साथ अपनी निशानियों के	तरफ़

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

فِرْعَوْنَ	وَمَلَا۟ئِهٖ	فَظَلَمُوْا	بِهَا ۚ	فَانْظُرْ	كَيْفَ	كَانَ
फ़िरऔन	और उसके सरदारों के	तो उन्होंने ज़ुल्म किया	साथ उनके	पस देखिए	किस तरह	हुआ

عَاقِبَةُ	الْمُفْسِدِيْنَ ﴿103﴾	وَقَالَ	مُوْسٰى	يٰفِرْعَوْنُ	اِنِّيْ	رَسُوْلٌ
अंजाम	फ़साद करने वालों का	और कहा	मूसा ने	ऐ फ़िरऔन	बेशक मैं	एक रसूल हूं

مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿104﴾ لَا	حَقِيْقٌ	عَلٰٓى	اَنْ	لَّآ	اَقُوْلَ	عَلَى اللّٰهِ
रब्बल आलमीन की तरफ़ से	क़ायम हूं	इस पर	कि	ना	मैं कहुं	अल्लाह पर

اِلَّا	الْحَقَّ ؕ	قَدْ	جِئْتُكُمْ	بِبَيِّنَةٍ	مِّنْ رَّبِّكُمْ	فَاَرْسِلْ
मगर	हक़ (बात)	तहक़ीक़	लाया हूं मैं तुम्हारे पास	एक वाज़ेह निशानी	तुम्हारे रब की तरफ़ से	पस भेज दो

مَعِيَ	بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿105﴾ ؕ	قَالَ	اِنْ	كُنْتَ	جِئْتَ	بِاٰيَةٍ	فَاْتِ
साथ मेरे	बनी इस्राईल को	उसने कहा	अगर	है तू	लाया तू	कोई निशानी	तो ले आ

بِهَآ	اِنْ	كُنْتَ	مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿106﴾	فَاَلْقٰى	عَصَاهُ	فَاِذَا
उसे	अगर	है तू	सच्चों में से	तो उसने डाला	असा अपना	तो यकायक

هِيَ	ثُعْبَانٌ	مُّبِيْنٌ ﴿107﴾ ۚ	وَّنَزَعَ	يَدَهٗ	فَاِذَا	هِيَ	بَيْضَآءُ
वो	अज़्दहा था	वाज़ेह	और उसने बाहर निकाला	हाथ अपना	तो यकायक	वो	सफ़ेद चमकता हुआ था

لِلنّٰظِرِيْنَ ﴿108﴾ ع	قَالَ	الْمَلَاُ	مِنْ قَوْمِ	فِرْعَوْنَ	اِنَّ	هٰذَا	لَسٰحِرٌ
देखने वालों के लिए	कहा	सरदारों ने	क़ौम मे से	फ़िरऔन की	बेशक	ये	अलबत्ता जादूगर है

ع 13 9 3

عَلِيْمٌ ﴿109﴾ لَا	يُّرِيْدُ	اَنْ	يُّخْرِجَكُمْ	مِّنْ اَرْضِكُمْ ۚ	فَمَاذَا	تَاْمُرُوْنَ ﴿110﴾
ख़ूब इल्म रखने वाला	वो चाहता है	कि	वो निकाल दे तुम्हें	तुम्हारी ज़मीन से	तो क्या	तुम हुक्म (मशवरा) देते हो

قَالُوْٓا	اَرْجِهْ	وَاَخَاهُ	وَاَرْسِلْ	فِي الْمَدَآئِنِ	حٰشِرِيْنَ ﴿111﴾ لَا
उन्होंने कहा	इंतिज़ार में रखो इसे	और इसके भाई को	और भेज दो	शहरों में	इकट्ठा करने वाले

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

يَاْتُوْكَ	بِكُلِّ	سٰحِرٍ	عَلِيْمٍ ﴿112﴾	وَجَآءَ	السَّحَرَةُ	فِرْعَوْنَ
वो ले आऐंगे तेरे पास	हर	जादूगर	माहिर को	और आए	जादूगर	फ़िरऔन के पास

قَالُوْٓا	اِنَّ	لَنَا	لَاَجْرًا	اِنْ	كُنَّا	نَحْنُ	الْغٰلِبِيْنَ ﴿113﴾
वो कहने लगे	बेशक	हमारे लिए	अलबत्ता अजर (इनआम) होगा	अगर	हुए हम	हम	ग़ालिब

قَالَ	نَعَمْ	وَاِنَّكُمْ	لَمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿114﴾	قَالُوْا	يٰمُوْسٰٓى
उसने कहा	हाँ	और बेशक तुम	अलबत्ता मुक़र्रबीन में से होगे	उन्होंने कहा	ऐ मूसा

اِمَّآ	اَنْ	تُلْقِيَ	وَاِمَّآ	اَنْ	نَّكُوْنَ	نَحْنُ	الْمُلْقِيْنَ ﴿115﴾	قَالَ
या	ये कि	तुम डालो	और या	ये कि	हम हों	हम ही	डालने वाले	उसने कहा

اَلْقُوْا ۚ	فَلَمَّآ	اَلْقَوْا	سَحَرُوْٓا	اَعْيُنَ	النَّاسِ	وَاسْتَرْهَبُوْهُمْ
तुम डालो	तो जब	उन्होंने डाला	उन्होंने मसहूर कर दिया	निगाहों को	लोगों की	और उन्होंने ख़ौफ़ज़दा कर दिया उन्हें

وَجَآءُوْ	بِسِحْرٍ	عَظِيْمٍ ﴿116﴾	وَاَوْحَيْنَآ	اِلٰى مُوْسٰٓى	اَنْ	اَلْقِ
और वो लाए	जादू	बहुत बड़ा	और वही की हमने	तरफ़ मूसा के	ये कि	फेंको तुम

عَصَاكَ ۚ	فَاِذَا	هِيَ	تَلْقَفُ	مَا	يَاْفِكُوْنَ ﴿117﴾ ۚ	فَوَقَعَ	الْحَقُّ
लाठी अपनी	तो यकायक	वो	वो निगल रही थी	उसे जो	वो गढ़ लाए थे	तो साबित हो गया	हक़

وَبَطَلَ	مَا	كَانُوْا	يَعْمَلُوْنَ ﴿118﴾ ۚ	فَغُلِبُوْا	هُنَالِكَ	وَانْقَلَبُوْا
और बातिल हो गया	जो	थे वो	वो अमल करते	पस मग़लूब कर दिए गए	उसी जगह	और वो पलटे

صٰغِرِيْنَ ﴿119﴾ ۚ	وَاُلْقِيَ	السَّحَرَةُ	سٰجِدِيْنَ ﴿120﴾ ۜ	قَالُوْٓا	اٰمَنَّا
ज़लील होकर	और डाल दिए गए	जादूगर	सज्दे में	उन्होंने कहा	ईमान लाए हम

بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿121﴾ ۙ	رَبِّ	مُوْسٰى	وَهٰرُوْنَ ﴿122﴾	قَالَ	فِرْعَوْنُ	اٰمَنْتُمْ
रब्बल आलमीन पर	जो रब है	मूसा	और हारून का	कहा	फ़िरऔन ने	ईमान लाए तुम

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

بِهٖ	قَبْلَ	اَنْ	اٰذَنَ	لَكُمْ ج	اِنَّ	هٰذَا	لَمَكْرٌ	مَّكَرْتُمُوْهُ
उस पर	इससे पहले	कि	मैं इजाज़त दूं	तुम्हें	बेशक	ये	अलबत्ता चाल थी	चाल चली तुमने ये

فِى الْمَدِيْنَةِ	لِتُخْرِجُوْا	مِنْهَآ	اَهْلَهَا ج	فَسَوْفَ	تَعْلَمُوْنَ 123
शहर में	ताकि तुम निकाल ले जाओ	इससे	इसके रहने वालों को	पस अनक़रीब	तुम जान लोगे

لَاُقَطِّعَنَّ	اَيْدِيَكُمْ	وَاَرْجُلَكُمْ	مِّنْ خِلَافٍ	ثُمَّ	لَاُصَلِّبَنَّكُمْ
अलबत्ता मैं जरूर काट दुंगा	हाथ तुम्हारे	और पांव तुम्हारे	मुख़ालिफ़ सिम्त से	फिर	अलबत्ता मैं ज़रूर सूली चढ़ाउंगा तुम्हें

اَجْمَعِيْنَ 124	قَالُوْآ	اِنَّآ	اِلٰى رَبِّنَا	مُنْقَلِبُوْنَ 125 ج	وَمَا	تَنْقِمُ
सबके-सबको	उन्होंने कहा	बेशक हम	तरफ़ अपने रब के	पलटने वाले हैं	और नहीं	तुम नाराज़ होते

مِنَّآ	اِلَّآ	اَنْ	اٰمَنَّا	بِاٰيٰتِ	رَبِّنَا	لَمَّا	جَآءَتْنَا ط	رَبَّنَآ
हमसे	मगर	ये कि	ईमान लाए हम	निशानियों पर	अपने रब की	जब	वो आईं हमारे पास	ऐ हमारे रब

ع 14 18 4

اَفْرِغْ	عَلَيْنَا	صَبْرًا	وَّتَوَفَّنَا	مُسْلِمِيْنَ 126 ع	وَقَالَ	الْمَلَاُ
उंडेल दे	हम पर	सब्र	और फ़ौत कर हमें	इस हाल में कि मुसलमान हों	और कहा	सरदारों ने

مِنْ قَوْمِ	فِرْعَوْنَ	اَتَذَرُ	مُوْسٰى	وَقَوْمَهٗ	لِيُفْسِدُوْا	فِى الْاَرْضِ
क़ौम मे से	फ़िरऔन की	क्या तुम छोड़ दोगे	मूसा को	और उसकी क़ौम को	कि वो फ़साद फैलाएं	ज़मीन में

وَيَذَرَكَ	وَاٰلِهَتَكَ ط	قَالَ	سَنُقَتِّلُ	اَبْنَآءَهُمْ	وَنَسْتَحْيٖ
और छोड़ दें तुझे	और तेरे इलाहों को	उसने कहा	ज़रूर हम ख़ूब क़त्ल कर देंगे	उनके बेटों को	और हम ज़िंदा छोड़ देंगे

نِسَآءَهُمْ ج	وَاِنَّا	فَوْقَهُمْ	قٰهِرُوْنَ 127	قَالَ	مُوْسٰى	لِقَوْمِهِ
उनकी औरतों को	और बेशक हम	ऊपर उनके	ज़बरदस्त हैं	कहा	मूसा ने	अपनी क़ौम से

اسْتَعِيْنُوْا	بِاللّٰهِ	وَاصْبِرُوْا ج	اِنَّ	الْاَرْضَ	لِلّٰهِ قف	يُوْرِثُهَا	مَنْ
मदद मांगो तुम	अल्लाह से	और सब्र करो	बेशक	ज़मीन	अल्लाह ही के लिए है	वो वारिस बनाता है उसका	जिसे

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

يَّشَآءُ	مِنْ عِبَادِهٖ ؕ	وَالْعَاقِبَةُ	لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿128﴾	قَالُوْٓا	اُوْذِيْنَا
वो चाहता है	अपने बंदों में से	और अंजाम	मुत्तक़ी लोगों के लिए है	उन्होंने कहा	अज़ीयत दिए गए हम

مِنْ قَبْلِ	اَنْ	تَاْتِيَنَا	وَمِنْۢ بَعْدِ	مَا	جِئْتَنَا ؕ	قَالَ
इससे पहले	कि	तू आए हमारे पास	और बाद इसके	जो	तू आ गया हमारे पास	उसने जवाब दिया

عَسٰى	رَبُّكُمْ	اَنْ	يُّهْلِكَ	عَدُوَّكُمْ	وَيَسْتَخْلِفَكُمْ	فِى الْاَرْضِ
क़रीब है	रब तुम्हारा कि	कि	हलाक करदे	तुम्हारे दुश्मन को	और जानशीन बनाए तुम्हें	ज़मीन में

فَيَنْظُرَ	كَيْفَ	تَعْمَلُوْنَ ﴿129﴾ ع	وَلَقَدْ	اَخَذْنَآ	اٰلَ فِرْعَوْنَ	بِالسِّنِيْنَ
फिर वो देखे	किस तरह	तुम अमल करते हो	और अलबत्ता तहक़ीक़	पकड़ा हमने	आले फ़िरऔन को	साथ क़हतसालियों के

ع 15 3 5

وَنَقْصٍ	مِّنَ الثَّمَرٰتِ	لَعَلَّهُمْ	يَذَّكَّرُوْنَ ﴿130﴾	فَاِذَا	جَآءَتْهُمُ
और कमी के	फलों मे से	शायद कि वो	वो नसीहत पकड़ें	फिर जब	आती उनके पास

الْحَسَنَةُ	قَالُوْا	لَنَا	هٰذِهٖ ۚ	وَاِنْ	تُصِبْهُمْ	سَيِّئَةٌ
भलाई	वो कहते हैं	हमारे लिए है	ये	और अगर	पहुंचती उन्हें	कोई बुराई

يَّطَّيَّرُوْا	بِمُوْسٰى	وَمَنْ	مَّعَهٗ ؕ	اَلَآ	اِنَّمَا	طٰٓئِرُهُمْ
वो बगशगुनी लेते	मूसा से	और उनसे जो	साथ थे उसके	ख़बरदार	बेशक	नहूसत उनकी

عِنْدَ اللّٰهِ	وَلٰكِنَّ	اَكْثَرَهُمْ	لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿131﴾	وَقَالُوْا	مَهْمَا
अल्लाह के पास है	और लेकिन	अक्सर उनके	नहीं वो जानते	और उन्होंने कहा	जो भी

تَاْتِنَا بِهٖ	مِنْ اٰيَةٍ	لِّتَسْحَرَنَا	بِهَا ۙ	فَمَا	نَحْنُ	لَكَ
तू लाएगा हमारे पास	कोई निशानी	कि तू मसहूर कर दे हमें	साथ उसके	तो नहीं	हम	तुझ पर

فَاَرْسَلْنَا	عَلَيْهِمُ	الطُّوْفَانَ	وَالْجَرَادَ	وَالْقُمَّلَ	وَالضَّفَادِعَ	وَالدَّمَ
तो भेजा हमने	उन पर	तूफ़ान	और टिड्डियां	और जूएं	और मेंढक	और ख़ून

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اٰيٰتٍ	مُّفَصَّلٰتٍ قف	فَاسْتَكْبَرُوْا	وَ كَانُوْا	قَوْمًا	مُّجْرِمِيْنَ ﴿133﴾
निशानियां	अलग-अलग	तो उन्होंने तकब्बुर किया	और थे वो	लोग	मुजरिम

وَ لَمَّا	وَقَعَ	عَلَيْهِمُ	الرِّجْزُ	قَالُوْا	يٰمُوْسَى	ادْعُ	لَنَا
और जब	वाक़ेअ हुआ	उन पर	अज़ाब	कहने लगे	ऐ मूसा	दुआ कर	हमारे लिए

رَبَّكَ	بِمَا	عَهِدَ	عِنْدَكَ ج	لَئِنْ	كَشَفْتَ	عَنَّا	الرِّجْزَ
अपने रब से	बवजह उसके जो	उसने अहद किया	पास तेरे	अलबत्ता अगर	हटा दे तू	हमसे	अज़ाब

لَنُؤْمِنَنَّ	لَكَ	وَ لَنُرْسِلَنَّ	مَعَكَ	بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿134﴾ ج	فَلَمَّا
अलबत्ता हम ज़रूर ईमान ले आएंगे	तुझ पर	और अलबत्ता हम ज़रूर भेजेंगे	साथ तेरे	बनी इस्राईल को	फिर जब

كَشَفْنَا	عَنْهُمُ	الرِّجْزَ	اِلٰٓى اَجَلٍ	هُمْ	بٰلِغُوْهُ	اِذَا	هُمْ
हटा देते हम	उनसे	अज़ाब को	एक वक़्त तक	वो	पहुंचने वाले थे जिसे	यकायक	वो

يَنْكُثُوْنَ ﴿135﴾	فَانْتَقَمْنَا	مِنْهُمْ	فَاَغْرَقْنٰهُمْ	فِي الْيَمِّ	بِاَنَّهُمْ
वो अहद तोड़ डालते	पस इंतिक़ाम लिया हमने	उनसे	फिर ग़र्क़ कर दिया हमने उन्हें	समुन्दर में	बवजह उसके कि उन्होंने

كَذَّبُوْا	بِاٰيٰتِنَا	وَ كَانُوْا	عَنْهَا	غٰفِلِيْنَ ﴿136﴾	وَ اَوْرَثْنَا	الْقَوْمَ
झुठला दिया था	हमारी आयात को	और थे वो	उनसे	ग़ाफ़िल	और वारिस बना दिया हमने	उन लोगों को

الَّذِيْنَ	كَانُوْا	يُسْتَضْعَفُوْنَ	مَشَارِقَ الْاَرْضِ	وَ مَغَارِبَهَا	الَّتِيْ
वो जो	थे वो	वो कमज़ोर समझे जाते	ज़मीन के मशरिकों का	और उसके मग़रिबों का	वो जो

بٰرَكْنَا	فِيْهَا ط	وَ تَمَّتْ	كَلِمَتُ	رَبِّكَ	الْحُسْنٰى	عَلٰى
बरकत दी थी हमने	उसमें	और पूरी हो गई	बात	आपके रब की	भलाई वाली	ऊपर

بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۛ	بِمَا	صَبَرُوْا ط	وَ دَمَّرْنَا	مَا	كَانَ	يَصْنَعُ
बनी इस्राईल के	बवजह उसके जो	उन्होंने सब्र किया	और बरबाद कर दिया हमने	जो	था	बनाता

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

فِرْعَوْنَ	وَقَوْمِهٖٓ	وَمَا	كَانُوْا	يَعْرِشُوْنَ ﴿137﴾	وَجٰوَزْنَا
फिरऔन	और उसकी क़ौम के लोग	और जो कुछ	थे वो	वो बुलंद करते	और पार उतार दिया हमने

بِبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ	الْبَحْرَ	فَاَتَوْا	عَلٰى قَوْمٍ	يَّعْكُفُوْنَ	عَلٰٓى اَصْنَامٍ
बनी इस्राईल को	समुन्दर के	तो वो आए	ऐसे लोगों पर	जो जमे बैठे थे	बुतों पर

لَّهُمْ ۚ	قَالُوْا	يٰمُوْسَى	اجْعَلْ	لَّنَآ	اِلٰهًا	كَمَا	لَهُمْ
अपने	उन्होंने कहा	ऐ मूसा	बना	हमारे लिए	कोई इलाह	जैसा कि	उन लोगों के लिए

اٰلِهَةٌ ؕ	قَالَ	اِنَّكُمْ	قَوْمٌ	تَجْهَلُوْنَ ﴿138﴾	اِنَّ	هٰٓؤُلَآءِ
इलाह हैं	कहा	बेशक तुम	लोग	तुम जहालत बरत रहे हो	बेशक	ये सब

مُتَبَّرٌ	مَّا	هُمْ	فِيْهِ	وَبٰطِلٌ	مَّا	كَانُوْا	يَعْمَلُوْنَ ﴿139﴾
बर्बाद होने वाला है	जो	वो हैं	उसमें	और बातिल/ग़लत हैं	जो कुछ	है वो	वो अमल करते

قَالَ	اَغَيْرَ	اللّٰهِ	اَبْغِيْكُمْ	اِلٰهًا	وَّهُوَ	فَضَّلَكُمْ
कहा	क्या ग़ैर	अल्लाह के	मैं तलाश करूं तुम्हारे लिए	कोई इलाह	हालांकि वो	उसने फ़ज़ीलत बख़्शी तुम्हें

عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿140﴾	وَاِذْ	اَنْجَيْنٰكُمْ	مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ	يَسُوْمُوْنَكُمْ
तमाम जहान वालों पर	और जब	निजात दी हमने तुम्हें	आले फ़िरऔन से	वो चखाते थे तुम्हें

سُوْٓءَ	الْعَذَابِ ۚ	يُقَتِّلُوْنَ	اَبْنَآءَكُمْ	وَيَسْتَحْيُوْنَ	نِسَآءَكُمْ ؕ
बुरा	अज़ाब	वो ख़ूब क़त्ल करते	तुम्हारे बेटों को	और वो ज़िंदा छोड़ देते	तुम्हारी औरतों को

وَفِيْ ذٰلِكُمْ	بَلَآءٌ	مِّنْ رَّبِّكُمْ	عَظِيْمٌ ﴿141﴾ ع	وَوٰعَدْنَا	مُوْسٰى
और इसमें	आज़माइश थी	तुम्हारे रब की तरफ़ से	बहुत बड़ी	और वादा लिया हमने	मूसा से

ثَلٰثِيْنَ	لَيْلَةً	وَّاَتْمَمْنٰهَا	بِعَشْرٍ	فَتَمَّ	مِيْقَاتُ	رَبِّهٖٓ
तीस	रात का	और पूरा किया हमने उन्हें	साथ दस के	तो पूरा हुआ	मुक़र्रर वक़्त	उसके रब का

© ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اَرْبَعِيْنَ	لَيْلَةً ۚ	وَ قَالَ	مُوْسٰى	لِاَخِيْهِ هٰرُوْنَ	اخْلُفْنِيْ	فِيْ قَوْمِيْ
चालीस	रात का	और कहा	मूसा ने	अपने भाई हारून से	जानशीनी करो मेरी	मेरी क़ौम में

وَ اَصْلِحْ	وَلَا	تَتَّبِعْ	سَبِيْلَ	الْمُفْسِدِيْنَ ﴿142﴾	وَ لَمَّا	جَآءَ
और इस्लाह करो	और ना	तुम पैरवी करो	रास्ते की	फ़साद करने वालों के	और जब	आया

مُوْسٰى	لِمِيْقَاتِنَا	وَ كَلَّمَهٗ	رَبُّهٗ ۙ	قَالَ	رَبِّ	اَرِنِيْٓ	اَنْظُرْ
मूसा	हमारे मुक़र्रर वक़्त पर	और कलाम किया उससे	उसके रब ने	कहा	ऐ मेरे रब	दिखा मुझे	मैं देखूं

اِلَيْكَ ؕ	قَالَ	لَنْ	تَرٰىنِيْ	وَلٰكِنِ	انْظُرْ	اِلَى الْجَبَلِ	فَاِنِ
तेरी तरफ़	फरमाया	हरगिज़ ना	तुम देख सकोगे मुझे	और लेकिन	देखो	तरफ़ पहाड़ के	फिर अगर

اسْتَقَرَّ	مَكَانَهٗ	فَسَوْفَ	تَرٰىنِيْ ۚ	فَلَمَّا	تَجَلّٰى	رَبُّهٗ
वो क़ायम रहे	अपनी जगह पर	तो अनक़रीब	तुम देख लोगे मुझे	तो जब	तजल्ली की	उसके रब ने

لِلْجَبَلِ	جَعَلَهٗ	دَكًّا	وَّ خَرَّ	مُوْسٰى	صَعِقًا ۚ	فَلَمَّآ	اَفَاقَ
पहाड़ पर	उसने कर दिया उसे	रेज़ा-रेज़ा	और गिर पड़ा	मूसा	बेहोश होकर	फिर जब	होश में आया

قَالَ	سُبْحٰنَكَ	تُبْتُ	اِلَيْكَ	وَ اَنَا	اَوَّلُ	الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿143﴾	قَالَ
उसने कहा	पाक है तू	तौबा करता हूं मैं	तेरी तरफ़	और मैं	सबसे पहला हूं	ईमान लाने वालों में	फ़रमाया

يٰمُوْسٰٓى	اِنِّي	اصْطَفَيْتُكَ	عَلَى النَّاسِ	بِرِسٰلٰتِيْ	وَ بِكَلَامِيْ ۖ
ऐ मूसा	बेशक मैं	चुन लिया मैंने तुझे	लोगों पर	साथ अपने पैग़ामात के	और साथ अपने कलाम के

فَخُذْ	مَآ	اٰتَيْتُكَ	وَ كُنْ	مِّنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿144﴾	وَ كَتَبْنَا	لَهٗ
पस लेलो	जो	दिया मैंने तुझे	और हो जाओ	शुक्र करने वालों में से	और लिख दी हमने	उसके लिए

فِي الْاَلْوَاحِ	مِنْ كُلِّ شَيْءٍ	مَّوْعِظَةً	وَّ تَفْصِيْلًا	لِّكُلِّ	شَيْءٍ ۚ
तख़्तियों में	हर चीज़ के बारे में	नसीहत	और तफ़सील	वास्ते हर	चीज़ के

© ALL INDIA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

بِاَحْسَنِهَا ؕ	يَاْخُذُوْا	قَوْمَكَ	وَّاْمُرْ	بِقُوَّةٍ	فَخُذْهَا
उनके बेहतरीन को	वो ले लें	अपनी क़ौम को	और हुक्म दो	मज़बूती से	पस पकड़ लो उसे

الَّذِيْنَ	عَنْ اٰيٰتِيَ	سَاَصْرِفُ	الْفٰسِقِيْنَ ﴿145﴾	دَارَ	سَاُورِيْكُمْ
उन लोगों को जो	अपनी निशानियों से	अनक़रीब मैं फेर दुंगा	फ़ासिकों का	घर	अनक़रीब मैं दिखाउंगा तुम्हें

اٰيَةٍ	كُلَّ	يَّرَوْا	وَاِنْ	الْحَقِّ ؕ	بِغَيْرِ	فِي الْاَرْضِ	يَتَكَبَّرُوْنَ
निशानी	हर	वो देख लें	और अगर	हक़ के	बग़ैर	ज़मीन में	तकब्बुर करते हैं

لَا يَتَّخِذُوْهُ	الرُّشْدِ	سَبِيْلَ	يَّرَوْا	وَاِنْ	بِهَا ۚ	لَّا يُؤْمِنُوْا
नहीं वो बनाऐंगे उसे	हिदायत का	रास्ता	वो देखलें	और अगर	उस पर	नहीं वो ईमान लाऐंगे

ذٰلِكَ	سَبِيْلًا ؕ	يَتَّخِذُوْهُ	الْغَيِّ	سَبِيْلَ	يَّرَوْا	وَاِنْ	سَبِيْلًا ۚ
ये	रास्ता	वो बनालेंगे उसे	गुमराही का	रास्ता	वो देखलें	और अगर	रास्ता

غٰفِلِيْنَ ﴿146﴾	عَنْهَا	وَكَانُوْا	بِاٰيٰتِنَا	كَذَّبُوْا	بِاَنَّهُمْ
ग़ाफ़िल	उनसे	और थे वो	हमारी आयात को	झुठलाया	बवजह उसके कि उन्होंने

اَعْمَالُهُمْ ؕ	حَبِطَتْ	الْاٰخِرَةِ	وَلِقَآءِ	بِاٰيٰتِنَا	كَذَّبُوْا	وَالَّذِيْنَ
आमाल उनके	ज़ाया हो गए	आख़िरत की	और मुलाक़ात को	हमारी निशानियों को	झुठलाया	और वो जिन्होंने

وَاتَّخَذَ	يَعْمَلُوْنَ ﴿147﴾ ع	كَانُوْا	مَا	اِلَّا	يُجْزَوْنَ	هَلْ
और बना लिया	वो अमल करते	थे वो	जो	मगर	वो बदला दिए जाऐंगे	नहीं

ع 17 6 7

لَّهٗ	جَسَدًا	عِجْلًا	مِنْ حُلِيِّهِمْ	مِنْ بَعْدِهٖ	مُوْسٰى	قَوْمُ
उसकी	जिस्म वाला	एक बछड़ा	अपने ज़ेवरात में से	उसके पीछे से	मूसा की	क़ौम ने

يَهْدِيْهِمْ	وَلَا	لَا يُكَلِّمُهُمْ	اَنَّهٗ	يَرَوْا	اَلَمْ	خُوَارٌ ؕ
वो रहनुमाई करता था उनकी	और ना	नहीं वो कलाम करता था उनसे	कि बेशक वो	उन्होंने देखा	क्या नहीं	गाय की आवाज़ थी

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وقف لازم

سَبِيْلًا ۘ	اِتَّخَذُوْهُ	وَ كَانُوْا	ظٰلِمِيْنَ ﴿148﴾	وَ لَمَّا	سُقِطَ
किसी रास्ते (की तरफ़)	उन्होंने बना लिया उसे (माबूद)	और थे वो	ज़ालिम	और जब	वो गिराए गए

فِيْٓ اَيْدِيْهِمْ	وَ رَاَوْا	اَنَّهُمْ	قَدْ	ضَلُّوْا ۙ	قَالُوْا	لَئِنْ	لَّمْ
अपने हाथों में (नादिम हुए)	और उन्होंने देखा	कि बेशक वो	तहक़ीक़	वो भटक गए हैं	वो कहने लगे	यक़ीनन अगर	ना

يَرْحَمْنَا	رَبُّنَا	وَ يَغْفِرْ	لَنَا	لَنَكُوْنَنَّ	مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿149﴾
रहम किया हम पर	हमारे रब ने	और ना उसने बख़्शिश फ़रमाई	हमारी	अलबत्ता हम ज़रूर हो जाऐंगे	ख़सारा पाने वालों में से

وَ لَمَّا	رَجَعَ	مُوْسٰٓى	اِلٰى قَوْمِهٖ	غَضْبَانَ	اَسِفًا ۙ	قَالَ
और जब	पलटा	मूसा	तरफ़ अपनी क़ौम के	बहुत ग़ुस्से में	अफ़सोस करते हुए	उसने कहा

بِئْسَمَا	خَلَفْتُمُوْنِيْ	مِنْۢ بَعْدِيْ ۚ	اَعَجِلْتُمْ	اَمْرَ	رَبِّكُمْ ۚ
कितनी बुरी है जो	जानशीनी की तुमने मेरी	बाद मेरे	क्या जल्दी की तुमने	हुक्म से	अपने रब के

وَ اَلْقَى	الْاَلْوَاحَ	وَ اَخَذَ	بِرَاْسِ	اَخِيْهِ	يَجُرُّهٗٓ	اِلَيْهِ ؕ	قَالَ
और उसने डाल दीं	तख़्तियाँ	और उसने पकड़ लिया	सर	अपने भाई का	वो खींचने लगा उसे	तरफ़ अपने	उसने कहा

ابْنَ اُمَّ	اِنَّ	الْقَوْمَ	اسْتَضْعَفُوْنِيْ	وَ كَادُوْا	يَقْتُلُوْنَنِيْ ۖ	فَلَا
ऐ मेरी मां के बेटे	बेशक	उन लोगों ने	कमज़ोर समझा मुझे	और क़रीब था	वो क़त्ल कर देते मुझे	पस ना

تُشْمِتْ	بِيَ	الْاَعْدَآءَ	وَ لَا	تَجْعَلْنِيْ	مَعَ الْقَوْمِ	الظّٰلِمِيْنَ ﴿150﴾
तू हंसा	मुझ पर	दुश्मनों को	और ना	तू शामिल कर मुझे	साथ उन लोगों के	जो ज़ालिम हैं

قَالَ	رَبِّ	اغْفِرْ	لِيْ	وَ لِاَخِيْ	وَ اَدْخِلْنَا	فِيْ رَحْمَتِكَ ۖ	وَ اَنْتَ
कहा	ऐ मेरे रब	बख़्शदे	मुझे	और मेरे भाई को	और दाख़िल कर हमें	अपनी रहमत में	और तू

اَرْحَمُ	الرّٰحِمِيْنَ ﴿151﴾ ع	اِنَّ	الَّذِيْنَ	اتَّخَذُوا	الْعِجْلَ
सबसे ज़्यादा रहम वाला है	सब रहम करने वालों से	बेशक	वो लोग जिन्होंने	बना लिया	बछड़े को (माबूद)

ع 18 4 8

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

سَيَنَالُهُمْ	غَضَبٌ	مِّنْ رَّبِّهِمْ	وَذِلَّةٌ	فِي الْحَيٰوةِ	الدُّنْيَا ؕ
अनक़रीब पहुंचेगा उन्हें	ग़ज़ब	अपने रब की तरफ़ से	और रुस्वाई	ज़िंदगी में	दुनिया की

وَكَذٰلِكَ	نَجْزِي	الْمُفْتَرِيْنَ ﴿152﴾	وَالَّذِيْنَ	عَمِلُوا	السَّيِّاٰتِ	ثُمَّ
और इसी तरह	हम बदला देते हैं	झूठ बांधने वालों को	और वो लोग	जिन्होंने अमल किए	बुरे	फिर

تَابُوْا	مِنْۢ بَعْدِهَا	وَاٰمَنُوْٓا ۙ	اِنَّ	رَبَّكَ	مِنْۢ بَعْدِهَا	لَغَفُوْرٌ
तौबा कर ली	बाद उसके	और वो ईमान ले आए	बेशक	रब आपका	बाद उसके	अलबत्ता बहुत बख़्शने वाला है

رَّحِيْمٌ ﴿153﴾	وَلَمَّا	سَكَتَ	عَنْ مُّوْسَى	الْغَضَبُ	اَخَذَ
निहायत रहम करने वाला है	और जब	थम गया	मूसा से	ग़ज़ब	उसने ले लीं

الْاَلْوَاحَ ۖ	وَفِيْ نُسْخَتِهَا	هُدًى	وَّرَحْمَةٌ	لِّلَّذِيْنَ	هُمْ	لِرَبِّهِمْ
तख़्तियां	और उनकी तहरीर में	हिदायत	और रहमत थी	उन लोगों के लिए	वो जो	अपने रब से

يَرْهَبُوْنَ ﴿154﴾	وَاخْتَارَ	مُوْسٰى	قَوْمَهٗ	سَبْعِيْنَ	رَجُلًا
वो डरते हैं	और मुंतख़िब कर लिए	मूसा ने	अपनी क़ौम से	सत्तर	आदमी

لِّمِيْقَاتِنَا ۚ	فَلَمَّآ	اَخَذَتْهُمُ	الرَّجْفَةُ	قَالَ	رَبِّ	لَوْ
हमारे मुक़र्रर वक़्त के लिए	फिर जब	पकड़ लिया उन्हें	ज़लज़ले ने	उसने कहा	ऐ मेरे रब	अगर

شِئْتَ	اَهْلَكْتَهُمْ	مِّنْ قَبْلُ	وَاِيَّايَ ؕ	اَتُهْلِكُنَا	بِمَا	فَعَلَ
चाहता तू	हलाक कर देता तू इन्हें	इससे पहले	और मुझे भी	क्या तू हलाक करता हमें	बवजह उसके जो	किया

السُّفَهَآءُ	مِنَّا ۚ	اِنْ	هِيَ	اِلَّا	فِتْنَتُكَ ؕ	تُضِلُّ	بِهَا
कुछ नादानों ने	हम में से	नहीं है	ये	मगर	आज़माइश तेरी	तू गुमराह करता है	साथ इसके

مَنْ	تَشَآءُ	وَتَهْدِيْ	مَنْ	تَشَآءُ ؕ	اَنْتَ	وَلِيُّنَا	فَاغْفِرْ
जिसे	तू चाहता है	और तू हिदायत देता है	जिसे	तू चाहता है	तू ही	दोस्त है हमारा	पस बख़्श दे

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

لَنَا	وَارْحَمْنَا	وَاَنْتَ	خَيْرُ	الْغٰفِرِيْنَ ﴿155﴾	وَاكْتُبْ	لَنَا
हमें	और रहम फ़रमा हम पर	और तू	बेहतर है	सब बख़्शने वालों से	और लिख दे	हमारे लिए

فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا	حَسَنَةً	وَّفِي الْاٰخِرَةِ	اِنَّا	هُدْنَآ	اِلَيْكَ ؕ
इस दुनिया में	भलाई	और आख़िरत में	बेशक हम	रुजूअ किया हमने	तेरी तरफ़

قَالَ	عَذَابِيْٓ	اُصِيْبُ	بِهٖ	مَنْ	اَشَآءُ ۚ	وَرَحْمَتِيْ	وَسِعَتْ
फ़रमाया	अज़ाब मेरा	मैं पहुंचाता हूं	उसको	जिसे	मैं चाहता हूं	और रहमत मेरी	छाई हुई है

كُلَّ	شَيْءٍ ؕ	فَسَاَكْتُبُهَا	لِلَّذِيْنَ	يَتَّقُوْنَ	وَيُؤْتُوْنَ
हर	चीज़ पर	पस ज़रूर मैं लिख दुंगा उसे	उन लोगों के लिए जो	डरते हैं	और वो अदा करते हैं

الزَّكٰوةَ	وَالَّذِيْنَ	هُمْ	بِاٰيٰتِنَا	يُؤْمِنُوْنَ ﴿156﴾ ۚ	الَّذِيْنَ	يَتَّبِعُوْنَ
ज़कात	और वो जो	वो	हमारी आयात पर	वो ईमान लाते हैं	वो लोग जो	पैरवी करेंगे

الرَّسُوْلَ	النَّبِيَّ	الْاُمِّيَّ	الَّذِيْ	يَجِدُوْنَهٗ	مَكْتُوْبًا	عِنْدَهُمْ
उस रसूल	नबी की	जो उम्मी है	वो जो	वो पाते हैं उसे	लिखा हुआ	अपने पास

فِي التَّوْرٰىةِ	وَالْاِنْجِيْلِ ۫	يَاْمُرُهُمْ	بِالْمَعْرُوْفِ	وَيَنْهٰهُمْ
तौरात में	और इंजील में	वो हुक्म देता है उन्हें	नेकी का	और वो रोकता है उन्हें

عَنِ الْمُنْكَرِ	وَيُحِلُّ	لَهُمُ	الطَّيِّبٰتِ	وَيُحَرِّمُ	عَلَيْهِمُ	الْخَبٰٓئِثَ
मुंकर/बुराई से	और वो हलाल करता है	उनके लिए	पाकीज़ा चीज़ें	और वो हराम करता है	उन पर	नापाक चीज़ें

وَيَضَعُ	عَنْهُمْ	اِصْرَهُمْ	وَالْاَغْلٰلَ	الَّتِيْ	كَانَتْ	عَلَيْهِمْ ؕ	فَالَّذِيْنَ
और वो उतारता है	उनसे	बोझ उनके	और वो तौक़	वो जो	थे वो	उन पर	पस वो जो

اٰمَنُوْا	بِهٖ	وَعَزَّرُوْهُ	وَنَصَرُوْهُ	وَاتَّبَعُوا	النُّوْرَ	الَّذِيْٓ
ईमान लाए	उस पर	और उन्होंने क़ुव्वत दी उसे	और उन्होंने मदद की उसकी	और उन्होंने पैरवी की	उस नूर की	वो जो

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ع 19 6 9

اُنْزِلَ	مَعَهٗٓ ۙ	اُولٰٓئِكَ	هُمُ	الْمُفْلِحُوْنَ ﴿157﴾ ع	قُلْ	يٰٓاَيُّهَا	النَّاسُ
नाज़िल किया गया	साथ उसके	यही लोग हैं	वो	जो फ़लाह पाने वाले हैं	कह दीजिए	ऐ	लोगो

اِنِّيْ	رَسُوْلُ	اللّٰهِ	اِلَيْكُمْ	جَمِيْعًا ۨ	الَّذِيْ	لَهٗ	مُلْكُ	السَّمٰوٰتِ
बेशक मैं	रसूल हूं	अल्लाह का	तरफ़ तुम्हारे	सब के	वो ही है	जिसके लिए	बादशाहत है	आसमानों की

وَالْاَرْضِ ۚ	لَآ	اِلٰهَ	اِلَّا	هُوَ	يُحْيٖ	وَيُمِيْتُ ۗ	فَاٰمِنُوْا
और ज़मीन की	नहीं	कोई इलाह (बरहक़)	मगर	वो ही	वो ज़िंदा करता है	और वो मौत देता है	पस ईमान लाओ

بِاللّٰهِ	وَرَسُوْلِهِ	النَّبِيِّ	الْاُمِّيِّ	الَّذِيْ	يُؤْمِنُ	بِاللّٰهِ	وَكَلِمٰتِهٖ
अल्लाह पर	और उसके रसूल पर	जो नबी	उम्मी है	वो जो	ईमान रखता है	अल्लाह पर	और उसके कलिमात पर

وَاتَّبِعُوْهُ	لَعَلَّكُمْ	تَهْتَدُوْنَ ﴿158﴾	وَمِنْ قَوْمِ مُوْسٰٓى	اُمَّةٌ
और इत्तिबा करो उसका	ताकि तुम	तुम हिदायत पा जाओ	और मूसा की क़ौम में से	एक गिरोह था

يَّهْدُوْنَ	بِالْحَقِّ	وَبِهٖ	يَعْدِلُوْنَ ﴿159﴾	وَقَطَّعْنٰهُمُ	اثْنَتَيْ عَشْرَةَ
वो रहनुमाई करते	साथ हक़ के	और साथ उसी के	वो अदल करते	और अलग-अलग कर दिया हमने उन्हें	बारह

اَسْبَاطًا	اُمَمًا ؕ	وَاَوْحَيْنَآ	اِلٰى مُوْسٰٓى	اِذِ	اسْتَسْقٰىهُ	قَوْمُهٗٓ
क़बीलों में	जमाअतें बनाकर	और वही की हमने	तरफ़ मूसा के	जब	पानी मांगा उससे	उसकी क़ौम ने

اَنِ	اضْرِبْ	بِّعَصَاكَ	الْحَجَرَ ۚ	فَانْۢبَجَسَتْ	مِنْهُ	اثْنَتَا عَشْرَةَ
कि	मार	असा अपना	पत्थर पर	पस फूट निकले	उससे	बारह

عَيْنًا ؕ	قَدْ	عَلِمَ	كُلُّ	اُنَاسٍ	مَّشْرَبَهُمْ ؕ	وَظَلَّلْنَا	عَلَيْهِمُ
चश्मे	तहक़ीक़	जान लिया	हर	गिरोह ने	घाट अपना	और साया किया हमने	उन पर

الْغَمَامَ	وَاَنْزَلْنَا	عَلَيْهِمُ	الْمَنَّ	وَالسَّلْوٰى ؕ	كُلُوْا	مِنْ طَيِّبٰتِ
बादलों का	और नाज़िल किया हमने	उन पर	मन्न	और सलवा	खाओ	पाकीज़ा चीज़ों में से

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مَا	رَزَقْنٰكُمْ ؕ	وَمَا	ظَلَمُوْنَا	وَلٰكِنْ	كَانُوْٓا	اَنْفُسَهُمْ
जो	अता कीं हमने तुम्हें	और नहीं	उन्होंने ज़ुल्म किया हम पर	और लेकिन	थे वो	अपनी ही जानों पर

يَظْلِمُوْنَ ﴿160﴾	وَاِذْ	قِيْلَ	لَهُمُ	اسْكُنُوْا	هٰذِهِ	الْقَرْيَةَ	وَكُلُوْا
वो ज़ुल्म करते	और जब	कहा गया	उनसे	तुम ठहरो/रहो	इस	बस्ती में	और खाओ

مِنْهَا	حَيْثُ	شِئْتُمْ	وَقُوْلُوْا	حِطَّةٌ	وَّادْخُلُوا	الْبَابَ
उसमें से	जहां से	चाहो तुम	और कहो	बख़्श दे /حطة	और दाख़िल हो जाओ	दरवाज़े से

سُجَّدًا	نَّغْفِرْ	لَكُمْ	خَطِيْٓـٰٔتِكُمْ ؕ	سَنَزِيْدُ	الْمُحْسِنِيْنَ ﴿161﴾
सज्दा करते हुए	हम बख़्श देंगे	तुम्हारे लिए	ख़ताऐं तुम्हारी	अनक़रीब हम ज़्यादा देंगे	एहसान करने वालों को

فَبَدَّلَ	الَّذِيْنَ	ظَلَمُوْا	مِنْهُمْ	قَوْلًا	غَيْرَ	الَّذِىْ	قِيْلَ
पस बदल दिया	उन लोगों ने जिन्होंने	ज़ुल्म किया	उनमें से	बात को	सिवाय	उसके जो	कही गई थी

لَهُمْ	فَاَرْسَلْنَا	عَلَيْهِمْ	رِجْزًا	مِّنَ السَّمَآءِ	بِمَا	كَانُوْا
उन्हें	तो भेजा हमने	उन पर	अज़ाब	आसमान से	बवजह उसके जो	थे वो

يَظْلِمُوْنَ ﴿162﴾ ع	وَسْـَٔلْهُمْ	عَنِ الْقَرْيَةِ	الَّتِىْ	كَانَتْ	حَاضِرَةَ	الْبَحْرِ ۘ
वो ज़ुल्म करते	और पूछिए उनसे	उस बस्ती के बारे में	वो जो	थी वो	किनारे पर	समुन्दर के

اِذْ	يَعْدُوْنَ	فِى السَّبْتِ	اِذْ	تَاْتِيْهِمْ	حِيْتَانُهُمْ	يَوْمَ سَبْتِهِمْ
जब	वो ज़्यादती करते थे	सब्त/हफ़्ते के दिन में	जब	आती थीं उनके पास	मछलियां उनकी	दिन उनके हफ़्ते के

شُرَّعًا	وَّيَوْمَ	لَا يَسْبِتُوْنَ ۙ	لَا تَاْتِيْهِمْ ۚ	كَذٰلِكَ ۚ	نَبْلُوْهُمْ
ज़ाहिर हो कर	और जिस दिन	वो सब्त/हफ़्ते का दिन ना मनाते	नहीं वो आती थीं उनके पास	इसी तरह	हम आज़माते थे उन्हें

بِمَا	كَانُوْا	يَفْسُقُوْنَ ﴿163﴾	وَاِذْ	قَالَتْ	اُمَّةٌ	مِّنْهُمْ	لِمَ
बवजह उसके जो	थे वो	वो नाफ़रमानी करते	और जब	कहा	एक जमाअत ने	उनमें से	क्यों

ع 20 5 10 وقف لازم

معانقة 6

النصف

تَعِظُوْنَ	قَوْمًا ۙ	اللّٰهُ	مُهْلِكُهُمْ	اَوْ	مُعَذِّبُهُمْ	عَذَابًا
तुम नसीहत करते हो	ऐसी क़ौम को	अल्लाह	हलाक करने वाला है जिन्हें	या	अज़ाब देने वाला है जिन्हें	अज़ाब

شَدِيْدًا ؕ	قَالُوْا	مَعْذِرَةً	اِلٰى رَبِّكُمْ	وَلَعَلَّهُمْ	يَتَّقُوْنَ (164)
शदीद	उन्होंन कहा	मआज़रत (करने के लिए)	तरफ़ तुम्हारे रब के	और शायद कि वो	वो डर जाऐं

فَلَمَّا	نَسُوْا	مَا	ذُكِّرُوْا	بِهٖٓ	اَنْجَيْنَا	الَّذِيْنَ	يَنْهَوْنَ
फिर जब	वो भूल गए	जो	वो नसीहत किए गए थे	जिसकी	निजात दी हमने	उन्हें जो	वो रोकते थे

عَنِ السُّوْٓءِ	وَاَخَذْنَا	الَّذِيْنَ	ظَلَمُوْا	بِعَذَابٍۭ	بَـِٔيْسٍۭ	بِمَا
बुराई से	और पकड़ लिया हमने	उनको जिन्होंने	ज़ुल्म किया	साथ अज़ाब	सख़्त के	बवजह उसके जो

كَانُوْا	يَفْسُقُوْنَ (165)	فَلَمَّا	عَتَوْا	عَنْ	مَّا	نُهُوْا	عَنْهُ
थे वो	वो नाफ़रमानी करते	फिर जब	उन्होंने सरकशी की	उससे	जो	वो रोके गए थे	जिससे

قُلْنَا	لَهُمْ	كُوْنُوْا	قِرَدَةً	خٰسِـِٕيْنَ (166)	وَاِذْ	تَاَذَّنَ	رَبُّكَ
कहा हमने	उन्हें	हो जाओ	बंदर	ज़लील	और जब	खबर दी	आपके रब ने

لَيَبْعَثَنَّ	عَلَيْهِمْ	اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ	مَنْ	يَّسُوْمُهُمْ	سُوْٓءَ	الْعَذَابِ ؕ
अलबत्ता वो ज़रूर भेजेगा	उन पर	क़यामत के दिन तक	उसे जो	चखाएगा उन्हें	बुरा	अज़ाब

اِنَّ	رَبَّكَ	لَسَرِيْعُ	الْعِقَابِ ۖۚ	وَاِنَّهٗ	لَغَفُوْرٌ	رَّحِيْمٌ (167)
बेशक	रब आपका	अलबत्ता जल्द देने वाला है	सज़ा	और बेशक वो है	अलबत्ता बहुत बख़्शने वाला	निहायत रहम करने वाला

وَقَطَّعْنٰهُمْ	فِى الْاَرْضِ	اُمَمًا ۚ	مِنْهُمُ	الصّٰلِحُوْنَ	وَمِنْهُمْ
और टुकड़े-टुकड़े कर दिया हमने उनहें	ज़मीन में	गिरोह-गिरोह (बना कर)	उनमें से कुछ	नेक हैं	और उनमें से कुछ

دُوْنَ ذٰلِكَ ؗ	وَبَلَوْنٰهُمْ	بِالْحَسَنٰتِ	وَالسَّيِّاٰتِ	لَعَلَّهُمْ
इसके इलावा हैं	और आज़माया हमने उन्हें	साथ अच्छाइयों	और बुराइयों के	शायद कि वो

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

يَرْجِعُوْنَ ﴿168﴾	فَخَلَفَ	مِنْۢ بَعْدِهِمْ	خَلْفٌ	وَّرِثُوا	الْكِتٰبَ
वो रुजूअ करें	तो पीछे आए	बाद उनके	नाख़ल्फ़	जो वारिस हुए	किताब के

يَاْخُذُوْنَ	عَرَضَ	هٰذَا	الْاَدْنٰى	وَيَقُوْلُوْنَ	سَيُغْفَرُ	لَنَا ۚ
वो ले लेते हैं	मालो मता	इस	हक़ीर दुनिया का	और वो कहते हैं	ज़रूर बख़्श दिया जाएगा	हमें

وَاِنْ	يَّاْتِهِمْ	عَرَضٌ	مِّثْلُهٗ	يَاْخُذُوْهُ ؕ	اَلَمْ	يُؤْخَذْ	عَلَيْهِمْ
और अगर	आता है उनके पास	मालो मताअ	मानिंद उसी के	वो लेते हैं उसे	क्या नहीं	लिया गया	उनसे

مِّيْثَاقُ	الْكِتٰبِ	اَنْ	لَّا يَقُوْلُوْا	عَلَى اللّٰهِ	اِلَّا	الْحَقَّ	وَدَرَسُوْا
पुख़्ता अहद	किताब में	कि	ना वो कहें	अल्लाह पर	सिवाए	हक़ के	और उन्होंने पढ़ लिया था

مَا	فِيْهِ ؕ	وَالدَّارُ	الْاٰخِرَةُ	خَيْرٌ	لِّلَّذِيْنَ	يَتَّقُوْنَ ؕ	اَفَلَا
जो	उसमें है	और घर	आख़िरत का	बेहतर है	उनके लिए जो	डरते हैं	क्या भला नहीं

تَعْقِلُوْنَ ﴿169﴾	وَالَّذِيْنَ	يُمَسِّكُوْنَ	بِالْكِتٰبِ	وَاَقَامُوا	الصَّلٰوةَ ؕ
तुम अक़्ल रखते	और वो जो	मज़बूती से पकड़ते हैं	किताब को	और वो क़ायम करते हैं	नमाज़ को

اِنَّا	لَا نُضِيْعُ	اَجْرَ	الْمُصْلِحِيْنَ ﴿170﴾	وَاِذْ	نَتَقْنَا	الْجَبَلَ	فَوْقَهُمْ
बेशक हम	नहीं हम ज़ाया करते	अजर	इस्लाह करने वालों का	और जब	उठाया हमने	पहाड़ को	ऊपर उनके

كَاَنَّهٗ	ظُلَّةٌ	وَّظَنُّوْٓا	اَنَّهٗ	وَاقِعٌۢ	بِهِمْ ۚ	خُذُوْا	مَآ
गोया कि वो	एक सायबान था	और उन्होंने समझ लिया	कि बेशक वो	गिरने वाला है	उन पर	पकड़ो	जो

اٰتَيْنٰكُمْ	بِقُوَّةٍ	وَّاذْكُرُوْا	مَا	فِيْهِ	لَعَلَّكُمْ	تَتَّقُوْنَ ﴿171﴾ ع	وَاِذْ
दिया हमने तुम्हें	साथ क़ुव्वत के	और याद करो	जो	इसमें है	ताकि तुम	तुम मुत्तक़ी बन जाओ	और जब

ع 21 9 11

اَخَذَ	رَبُّكَ	مِنْۢ بَنِيْٓ اٰدَمَ	مِنْ ظُهُوْرِهِمْ	ذُرِّيَّتَهُمْ	وَاَشْهَدَهُمْ
लिया	आपके रब ने	बनी आदम से	उनकी पुश्तों से	उनकी औलाद को	और गवाह बनाया उनको

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

معانقة 7

عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ ۚ	اَلَسْتُ	بِرَبِّكُمْ ؕ	قَالُوْا	بَلٰى ۛ	شَهِدْنَا ۛ	اَنْ
अपने नफ़्सों पर	(फ़रमाया) क्या नहीं हूं मैं	रब तुम्हारा	उन्होंने कहा	क्यों नहीं	गवाही दी हमने	ताकि (ना)

تَقُوْلُوْا	يَوْمَ الْقِيٰمَةِ	اِنَّا	كُنَّا	عَنْ هٰذَا	غٰفِلِيْنَ ﴿172﴾ لا	اَوْ
तुम कहो	क़यामत के दिन	बेशक हम	थे हम	उससे	ग़ाफ़िल	या

تَقُوْلُوْٓا	اِنَّمَآ	اَشْرَكَ	اٰبَآؤُنَا	مِنْ قَبْلُ	وَ كُنَّا	ذُرِّيَّةً
तुम कहो	बेशक	शिर्क किया था	हमारे आबा ओ अजदाद ने	इससे पहले	और थे हम	औलाद

مِّنْۢ بَعْدِهِمْ ۚ	اَفَتُهْلِكُنَا	بِمَا	فَعَلَ	الْمُبْطِلُوْنَ ﴿173﴾	وَ كَذٰلِكَ
उनके बाद वालों की	क्या पस तू हलाक करता है हमें	बवजह उसके जो	किया	ग़लतकारों ने	और इसी तरह

نُفَصِّلُ	الْاٰيٰتِ	وَ لَعَلَّهُمْ	يَرْجِعُوْنَ ﴿174﴾	وَاتْلُ	عَلَيْهِمْ
हम खोल कर बयान करते हैं	आयात	और ताकि वो	वो रुजूअ कर लें	और पढ़िए	उन पर

نَبَاَ	الَّذِيْٓ	اٰتَيْنٰهُ	اٰيٰتِنَا	فَانْسَلَخَ	مِنْهَا	فَاَتْبَعَهُ	الشَّيْطٰنُ
ख़बर	उस शख़्स की	दीं हमने उसको	आयात अपनी	पस वो निकल गया	उनसे	फिर पीछे लग गया उसके	शैतान

فَكَانَ	مِنَ الْغٰوِيْنَ ﴿175﴾	وَ لَوْ	شِئْنَا	لَرَفَعْنٰهُ	بِهَا	وَلٰكِنَّهٗٓ
तो वो हो गया	गुमराहों में से	और अगर	चाहते हम	अलबत्ता बुलन्द करते हम उसे	साथ उनके	और लेकिन वो

اَخْلَدَ	اِلَى الْاَرْضِ	وَاتَّبَعَ	هَوٰىهُ ۚ	فَمَثَلُهٗ	كَمَثَلِ	الْكَلْبِ ۚ
वो झुक गया	तरफ़ ज़मीन के	और उसने पैरवी की	अपनी ख़्वाहिशात की	तो मिसाल उसकी	मानिंद मिसाल	कुत्ते के है

اِنْ	تَحْمِلْ	عَلَيْهِ	يَلْهَثْ	اَوْ	تَتْرُكْهُ	يَلْهَثْ ؕ	ذٰلِكَ	مَثَلُ
अगर	तू हमला करे	उस पर	वो ज़बान लटकाता है	या	तू छोड़ दे उसे	वो ज़बान लटकाता है	ये	मिसाल है

الْقَوْمِ	الَّذِيْنَ	كَذَّبُوْا	بِاٰيٰتِنَا ۚ	فَاقْصُصِ	الْقَصَصَ	لَعَلَّهُمْ
उस क़ौम की	जिन्होंने	झुठलाया	हमारी आयात को	पस बयान कीजिए	वाक़ियात	ताकि वो

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

يَتَفَكَّرُوْنَ ﴿176﴾	سَآءَ	مَثَلًا ۨ	الْقَوْمُ	الَّذِيْنَ	كَذَّبُوْا	بِاٰيٰتِنَا
वो ग़ौरो फ़िक्र करें	कितनी बुरी है	मिसाल	उन लोगों की	जिन्होंने	झुठलाया	हमारी अयात को

وَ اَنْفُسَهُمْ	كَانُوْا	يَظْلِمُوْنَ ﴿177﴾	مَنْ	يَّهْدِ	اللّٰهُ	فَهُوَ
और अपने ही नफ़्सों पर	थे वो	वो ज़ुल्म करते	जिसे	हिदायत बख़्शे	अल्लाह	पस वो ही

الْمُهْتَدِيْ ۚ	وَ مَنْ	يُّضْلِلْ	فَاُولٰٓئِكَ	هُمُ	الْخٰسِرُوْنَ ﴿178﴾	وَ لَقَدْ
हिदायत पाने वाला है	और जिसे	वो भटकादे	पस यही लोग हैं	वो	जो ख़सारा पाने वाले हैं	और अलबत्ता तहक़ीक़

ذَرَاْنَا	لِجَهَنَّمَ	كَثِيْرًا	مِّنَ الْجِنِّ	وَ الْاِنْسِ ۖ	لَهُمْ	قُلُوْبٌ
पैदा किए हमने	जहन्नम के लिए	बहुत से	जिन्नों में से	और इंसानों में से	उनके	दिल हैं

لَّا يَفْقَهُوْنَ	بِهَا ۫	وَ لَهُمْ	اَعْيُنٌ	لَّا يُبْصِرُوْنَ	بِهَا ۫	
नहीं वो समझते	साथ उनके	और उनकी	आंखें हैं	नहीं वो देखते	साथ उनके	

وَ لَهُمْ	اٰذَانٌ	لَّا يَسْمَعُوْنَ	بِهَا ؕ	اُولٰٓئِكَ	كَالْاَنْعَامِ	بَلْ
और उनके	कान हैं	नहीं वो सुनते	साथ उनके	यही लोग	मवेशियों की तरह हैं	बल्कि

هُمْ	اَضَلُّ ؕ	اُولٰٓئِكَ	هُمُ	الْغٰفِلُوْنَ ﴿179﴾	وَ لِلّٰهِ	الْاَسْمَآءُ
वो	ज़्यादा गुमराह हैं	यही लोग हैं	वो	जो ग़ाफ़िल हैं	और अल्लाह ही के लिए है	नाम

الْحُسْنٰى	فَادْعُوْهُ	بِهَا ۪	وَ ذَرُوا	الَّذِيْنَ	يُلْحِدُوْنَ	فِيْٓ اَسْمَآئِهٖ ؕ
अच्छे-अच्छे	पस पुकरो उसे	साथ उनके	और छोड़ दो	उन्हें जो	कज रवी करते हैं	उनके नामों की

سَيُجْزَوْنَ	مَا	كَانُوْا	يَعْمَلُوْنَ ﴿180﴾	وَ مِمَّنْ	خَلَقْنَآ
अनक़रीब वो बदला दिए जाऐंगे	उसका जो	थे वो	वो अमल करते	और उनमें से जिन्हें	पैदा किया हमने

اُمَّةٌ	يَّهْدُوْنَ	بِالْحَقِّ	وَ بِهٖ	يَعْدِلُوْنَ ﴿181﴾ ع	وَ الَّذِيْنَ	كَذَّبُوْا
एक गिरोह है	वो रहनुमाई करते हैं	साथ हक़ के	और साथ उसी के	वो अदल करते हैं	और वो जिन्होंने	झुठलाया

ع 22 10 12

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

بِاٰيٰتِنَا	سَنَسْتَدْرِجُهُمْ	مِّنْ حَيْثُ	لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿182﴾ ۚ	وَاُمْلِيْ
हमारी आयात को	ज़रूर हम आहिस्ता-आहिस्ता पकड़ेंगे उन्हें	जहां से	नहीं वो इल्म रखते	और मैं मोहलत दे रहा हूं

لَهُمْ ؕ	اِنَّ	كَيْدِيْ	مَتِيْنٌ ﴿183﴾	اَوَلَمْ	يَتَفَكَّرُوْا ۗ	مَا
उन्हें	बेशक	तदबीर मेरी	बहुत मज़बूत है	क्या भला नहीं	उन्होंने ग़ौरो फ़िक्र किया	नहीं है

بِصَاحِبِهِمْ	مِّنْ جِنَّةٍ ؕ	اِنْ	هُوَ	اِلَّا	نَذِيْرٌ	مُّبِيْنٌ ﴿184﴾	اَوَلَمْ
उनके साथी को	कोई जुनून	नहीं	वो	मगर	डराने वाला	खुल्लम-खुल्ला	क्या भला नहीं

يَنْظُرُوْا	فِيْ مَلَكُوْتِ	السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضِ	وَمَا	خَلَقَ	اللّٰهُ
उन्होंने देखा	बादशाहत में	आसमानों	और ज़मीन की	और जो भी	पैदा की	अल्लाह ने

مِنْ شَيْءٍ ۙ	وَّاَنْ	عَسٰٓى	اَنْ	يَّكُوْنَ	قَدِ	اقْتَرَبَ	اَجَلُهُمْ ۚ
कोई चीज़	और ये कि	उम्मीद है	कि	हो	तहक़ीक़	क़रीब आ चुकी	मुद्दत उनकी

فَبِاَيِّ	حَدِيْثٍ	بَعْدَهٗ	يُؤْمِنُوْنَ ﴿185﴾	مَنْ	يُّضْلِلِ	اللّٰهُ	فَلَا
तो साथ किस	बात के	बाद उसके	वो ईमान लाऐंगे	जिसे	भटका देता है	अल्लाह	पस नहीं

هَادِيَ	لَهٗ ؕ	وَيَذَرُهُمْ	فِيْ طُغْيَانِهِمْ	يَعْمَهُوْنَ ﴿186﴾	يَسْـَٔلُوْنَكَ
कोई हिदायत देने वाला	उसे	और वो छोड़ देता है उन्हें	उनकी सरकशी में	वो सरगरदां फिरते हैं	वो पूछते हैं आपसे

عَنِ السَّاعَةِ	اَيَّانَ	مُرْسٰىهَا ؕ	قُلْ	اِنَّمَا	عِلْمُهَا
उस घड़ी (क़यामत) के बारे में	कब है	ठहरना उसका	कह दीजिए	बेशक	इल्म उसका

عِنْدَ	رَبِّيْ ۚ	لَا يُجَلِّيْهَا	لِوَقْتِهَآ	اِلَّا	هُوَ ؕ	ثَقُلَتْ	فِي السَّمٰوٰتِ
पास है	मेरे रब के	नहीं ज़ाहिर करेगा उसे	उसके वक़्त पर	मगर	वो ही	भारी होगी	आसमानों में

وَالْاَرْضِ ؕ	لَا تَاْتِيْكُمْ	اِلَّا	بَغْتَةً ؕ	يَسْـَٔلُوْنَكَ	كَاَنَّكَ	حَفِيٌّ
और ज़मीन में	नहीं वो आएगी तुम्हारे पास	मगर	अचानक	वो पूछते हैं आपसे	गोया कि आप	पूरे बाख़बर हैं

وقف لازم وقف منزل

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

عَنْهَا ط	قُلْ	اِنَّمَا	عِلْمُهَا	عِنْدَ	اللّٰهِ	وَلٰكِنَّ	اَكْثَرَ	النَّاسِ
उससे	कह दीजिए	बेशक	इल्म उसका	पास है	अल्लाह के	और लेकिन	अक्सर	लोग

لَا يَعْلَمُوْنَ (187)	قُلْ	لَّآ اَمْلِكُ	لِنَفْسِىْ	نَفْعًا	وَّلَا	ضَرًّا
नहीं वो जानते	कह दीजिए	नहीं हूं मैं मालिक	अपने नफ़्स के लिए	किसी नफ़ा का	और ना	किसी नुक़्सान का

اِلَّا	مَا	شَآءَ	اللّٰهُ ط	وَلَوْ	كُنْتُ	اَعْلَمُ	الْغَيْبَ	لَاسْتَكْثَرْتُ
मगर	जो	चाहे	अल्लाह	और अगर	होता मैं	मैं जानता	ग़ैब को	अलबत्ता कसरत से ले लेता मैं

معانقة 8

مِنَ الْخَيْرِ ۛ	وَمَا	مَسَّنِىَ	السُّوْٓءُ ۛ	اِنْ	اَنَا	اِلَّا	نَذِيْرٌ	وَّبَشِيْرٌ
भलाई में से	और ना	पहुंचती मुझे	कोई तकलीफ़	नहीं हूं	मैं	मगर	डराने वाला	और ख़ुशख़बरी देने वाला

ع 23 7 13

لِّقَوْمٍ	يُّؤْمِنُوْنَ (188) ع	هُوَ	الَّذِىْ	خَلَقَكُمْ	مِّنْ نَّفْسٍ	وَّاحِدَةٍ
उन लोगों के लिए	जो ईमान लाते हैं	वो ही है	जिसने	पैदा किया तुम्हें	जान से	एक ही

وَّجَعَلَ	مِنْهَا	زَوْجَهَا	لِيَسْكُنَ	اِلَيْهَا ج	فَلَمَّا	تَغَشّٰهَا
और उसने बनाया	उस से	जोड़ा उसका	ताकि वो सुकून हासिल करे	तरफ़ उसके	फिर जब	उसने ढांप लिया उसे

حَمَلَتْ	حَمْلًا	خَفِيْفًا	فَمَرَّتْ	بِهٖ ج	فَلَمَّآ	اَثْقَلَتْ	دَّعَوَا
उसने उठाया	बोझ	हल्का	पस वो चलती रही	साथ उसके	फिर जब	वो बोझल हो गई	दोनों ने दुआ की

اللّٰهَ	رَبَّهُمَا	لَئِنْ	اٰتَيْتَنَا	صَالِحًا	لَّنَكُوْنَنَّ
अल्लाह से	जो रब है उन दोनों का	अलबत्ता अगर	दे दिया तूने हमें	सही सलामत (बच्चा)	अलबत्ता हम ज़रूर हो जाएंगे

مِنَ الشّٰكِرِيْنَ (189)	فَلَمَّآ	اٰتٰهُمَا	صَالِحًا	جَعَلَا	لَهٗ
शुक्र करने वालों में से	तो जब	उसने दिया उन दोनों को	सही सलामत	उन दोनों ने बना लिए	उसके लिए

شُرَكَآءَ	فِيْمَآ	اٰتٰهُمَا ج	فَتَعٰلَى	اللّٰهُ	عَمَّا	يُشْرِكُوْنَ (190)
शरीक	उसमें जो	उसने दिया उन्हें	पस बुलंदतर है	अल्लाह	उससे जो	वो शरीक ठहराते हैं

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اَيُشْرِكُوْنَ	مَا	لَا يَخْلُقُ	شَيْـًٔا	وَّهُمْ	يُخْلَقُوْنَ ﴿191﴾ ۖ	وَلَا
क्या वो शरीक ठहराते हैं	उनको जो	नहीं वो पैदा कर सकते	कुछ भी	और वो	वो पैदा किए जाते हैं	और नहीं

يَسْتَطِيْعُوْنَ	لَهُمْ	نَصْرًا	وَّلَآ	اَنْفُسَهُمْ	يَنْصُرُوْنَ ﴿192﴾	وَاِنْ
वो इस्तिताअत रखते	उनके लिए	किसी मदद की	और ना	अपने नफ़्सों की	वो मदद कर सकते हैं	और अगर

تَدْعُوْهُمْ	اِلَى الْهُدٰى	لَا يَتَّبِعُوْكُمْ ؕ	سَوَآءٌ	عَلَيْكُمْ	اَدَعَوْتُمُوْهُمْ
तुम बुलाओ उन्हें	तरफ़ हिदायत के	नहीं वो पैरवी करेंगे तुम्हारी	यक्सां है	तुम पर	ख़्वाह तुम बुलाओ उन्हें

اَمْ	اَنْتُمْ	صَامِتُوْنَ ﴿193﴾	اِنَّ	الَّذِيْنَ	تَدْعُوْنَ	مِنْ دُوْنِ	اللّٰهِ
या	तुम	ख़ामोश रहो	बेशक	वो जिन्हें	तुम पुकारते हो	सिवाए	अल्लाह के

عِبَادٌ	اَمْثَالُكُمْ	فَادْعُوْهُمْ	فَلْيَسْتَجِيْبُوْا	لَكُمْ	اِنْ	كُنْتُمْ
बंदे हैं	तुम्हारी तरह के	पस पुकारो उन्हें	तो चाहिए कि वो जवाब दें	तुम्हें	अगर	हो तुम

صٰدِقِيْنَ ﴿194﴾	اَلَهُمْ	اَرْجُلٌ	يَّمْشُوْنَ	بِهَآ	اَمْ	لَهُمْ	اَيْدٍ
सच्चे	क्या उनके	पांव हैं	कि वो चलते हों	साथ उनके	या	उनके	हाथ हैं

يَّبْطِشُوْنَ	بِهَآ	اَمْ	لَهُمْ	اَعْيُنٌ	يُّبْصِرُوْنَ	بِهَآ	اَمْ
कि वो पकड़ते हों	साथ उनके	या	उनकी	आंखें हैं	कि वो देखते हों	साथ उनके	या

لَهُمْ	اٰذَانٌ	يَّسْمَعُوْنَ	بِهَا ؕ	قُلِ	ادْعُوْا	شُرَكَآءَكُمْ
उनके	कान हैं	कि वो सुनते हों	साथ उनके	कह दीजिए	पुकारो	अपने शरीकों को

ثُمَّ	كِيْدُوْنِ	فَلَا	تُنْظِرُوْنِ ﴿195﴾	اِنَّ	وَلِيِّيَ	اللّٰهُ	الَّذِيْ
फिर	चाल चलो मेरे ख़िलाफ़	फिर ना	तुम मोहलत दो मुझे	बेशक	मेरा दोस्त	अल्लाह है	जिसने

نَزَّلَ	الْكِتٰبَ ۖ	وَهُوَ	يَتَوَلَّى	الصّٰلِحِيْنَ ﴿196﴾	وَالَّذِيْنَ	تَدْعُوْنَ
नाज़िल की है	किताब	और वो ही	दोस्त रखता है	सालेहीन को	और वो जिन्हें	तुम पुकारते हो

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مِنْ دُوْنِهٖ	لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ	نَصْرَكُمْ	وَلَآ	اَنْفُسَهُمْ	يَنْصُرُوْنَ ﴿197﴾
उसके सिवा	नहीं वो इस्तिताअत रखते	तुम्हारी मदद की	और ना	अपने नफ़्सों की	वो मदद कर सकते हैं

وَاِنْ	تَدْعُوْهُمْ	اِلَى الْهُدٰى	لَا يَسْمَعُوْا ؕ	وَتَرٰىهُمْ	يَنْظُرُوْنَ
और अगर	तुम पुकारो उन्हें	तरफ़ हिदायत के	नहीं वो सुनेंगे	और आप देखेंगे उन्हें	कि वो देख रहे हैं

اِلَيْكَ	وَهُمْ	لَا يُبْصِرُوْنَ ﴿198﴾	خُذِ	الْعَفْوَ	وَاْمُرْ	بِالْعُرْفِ
तरफ़ आपके	हालांकि वो	नहीं वो देख रहे	इख़्तियार कीजिए	दरगुज़र को	और हुक्म दीजिए	नेकी का

وَاَعْرِضْ	عَنِ الْجٰهِلِيْنَ ﴿199﴾	وَاِمَّا	يَنْزَغَنَّكَ	مِنَ الشَّيْطٰنِ	نَزْغٌ	
और ऐराज़ कीजिए	जाहिलों से	और अगर	वसवसा आए आपको	शैतान की तरफ़ से	कोई वसवसा	

فَاسْتَعِذْ	بِاللّٰهِ ؕ	اِنَّهٗ	سَمِيْعٌ	عَلِيْمٌ ﴿200﴾	اِنَّ	الَّذِيْنَ
पस पनाह तलब कीजिए	अल्लाह की	बेशक वो	ख़ूब सुनने वाला है	ख़ूब जानने वाला है	बेशक	वो जिन्होंने

اتَّقَوْا	اِذَا	مَسَّهُمْ	طٰٓئِفٌ	مِّنَ الشَّيْطٰنِ	تَذَكَّرُوْا	فَاِذَا
तक़वा किया	जब	छू जाता है उन्हें	कोई ख़्याल	शैतान की तरफ़ से	तो वो चौंक पड़ते हैं	फिर यकायक

هُمْ	مُّبْصِرُوْنَ ﴿201﴾ ج	وَاِخْوَانُهُمْ	يَمُدُّوْنَهُمْ	فِي الْغَيِّ	ثُمَّ
वो	देखने लगते हैं	और भाई उन (शैतानों) के	वो खींचते हैं उन्हें	गुमराही में	फिर

لَا يُقْصِرُوْنَ ﴿202﴾	وَاِذَا	لَمْ	تَاْتِهِمْ	بِاٰيَةٍ	قَالُوْا	لَوْلَا
नहीं वो कमी करते	और जब	नहीं	आप लाते उनके पास	कोई निशानी	वो कहते हैं	क्यों ना

اجْتَبَيْتَهَا ؕ	قُلْ	اِنَّمَآ	اَتَّبِعُ	مَا	يُوْحٰٓى	اِلَيَّ
चुन लाया तू उसे	कह दीजिए	बेशक	मैं पैरवी करता हूं	उसकी जो	वही की जाती है	तरफ़ मेरे

مِنْ رَّبِّيْ ج	هٰذَا	بَصَآئِرُ	مِنْ رَّبِّكُمْ	وَهُدًى	وَّرَحْمَةٌ
मेरे रब की तरफ़ से	ये	बसीरत की बातें हैं	तुम्हारे रब की तरफ़ से	और हिदायत	और रहमत है

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

لِقَوْمٍ	يُّؤْمِنُوْنَ ﴿203﴾	وَاِذَا	قُرِئَ	الْقُرْاٰنُ	فَاسْتَمِعُوْا	لَهٗ
उन लोगों के लिए	जो ईमान लाते हैं	और जब	पढ़ा जाए	क़ुरआन	पस ग़ौर से सुनो	उसे

وَاَنْصِتُوْا	لَعَلَّكُمْ	تُرْحَمُوْنَ ﴿204﴾	وَاذْكُرْ	رَّبَّكَ	فِيْ نَفْسِكَ
और ख़ामोश रहो	ताकि तुम	तुम रहम किए जाओ	और ज़िक्र कीजिए	अपने रब का	अपने दिल में

تَضَرُّعًا	وَّخِيْفَةً	وَّدُوْنَ	الْجَهْرِ	مِنَ الْقَوْلِ	بِالْغُدُوِّ
आजिज़ी	और ख़ौफ़ से	और बग़ैर	बुलंद	आवाज़ के	सुबह के वक़्त

وَالْاٰصَالِ	وَلَا	تَكُنْ	مِّنَ الْغٰفِلِيْنَ ﴿205﴾	اِنَّ	الَّذِيْنَ	عِنْدَ رَبِّكَ
और शाम के वक़्त	और ना	हों आप	ग़ाफ़िलों में से	बेशक	वो (फ़रिश्ते) जो	आपके रब के पास हैं

لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ	عَنْ عِبَادَتِهٖ	وَيُسَبِّحُوْنَهٗ	وَلَهٗ	يَسْجُدُوْنَ ﴿206﴾ السجدة
नहीं वो तकब्बुर करते	उसकी इबादत से	और वो तस्बीह करते हैं उसकी	और उसी को	वो सज्दा करते हैं

ع 24 18 14 السجدة الثالثة 1

8 سُوْرَةُ الْاَنْفَالِ مَدَنِيَّةٌ 88

اٰيَاتُهَا: 75 — رُكُوْعَاتُهَا: 10

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يَسْـَٔلُوْنَكَ	عَنِ الْاَنْفَالِ ؕ	قُلِ	الْاَنْفَالُ	لِلّٰهِ	وَالرَّسُوْلِ ۚ
वो सवाल करते हैं आपसे	ग़नीमतों के बारे में	कह दीजिए	ग़नीमतें	अल्लाह के लिए	और रसूल के लिए हैं

فَاتَّقُوا	اللّٰهَ	وَاَصْلِحُوْا	ذَاتَ بَيْنِكُمْ ۪	وَاَطِيْعُوا	اللّٰهَ	وَرَسُوْلَهٗٓ
पस डरो	अल्लाह से	और इस्लाह करो	आपस में	और इताअत करो	अल्लाह की	और उसके रसूल की

اِنْ	كُنْتُمْ	مُّؤْمِنِيْنَ ﴿1﴾	اِنَّمَا	الْمُؤْمِنُوْنَ	الَّذِيْنَ	اِذَا	ذُكِرَ
अगर	हो तुम	ईमान लाने वाले	बेशक	मोमिन तो	वो हैं	जब	ज़िक्र किया जाता है

اللّٰهُ	وَجِلَتْ	قُلُوْبُهُمْ	وَاِذَا	تُلِيَتْ	عَلَيْهِمْ	اٰيٰتُهٗ	زَادَتْهُمْ
अल्लाह का	डर जाते हैं	दिल उनके	और जब	पढ़ी जती हैं	उन पर	आयात उसकी	वो ज़्यादा कर देती हैं उन्हें

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اِيْمَانًا	وَّعَلٰى رَبِّهِمْ	يَتَوَكَّلُوْنَ ۚ ﴿2﴾	الَّذِيْنَ	يُقِيْمُوْنَ	الصَّلٰوةَ
ईमान में	और अपने रब पर ही	वो तवक्कल करते हैं	वो जो	क़ायम करते हैं	नमाज़

وَمِمَّا	رَزَقْنٰهُمْ	يُنْفِقُوْنَ ﴿3﴾ ؕ	اُولٰٓئِكَ	هُمُ	الْمُؤْمِنُوْنَ	حَقًّا ؕ
और उसमें से जो	रिज़्क़ दिया हमने उन्हें	वो ख़र्च करते हैं	यही लोग हैं	वो	जो मोमिन हैं	सच्चे

لَهُمْ	دَرَجٰتٌ	عِنْدَ رَبِّهِمْ	وَمَغْفِرَةٌ	وَّرِزْقٌ	كَرِيْمٌ ﴿4﴾ ۚ	كَمَآ
उनके लिए	दरजे हैं	उनके रब के पास	और बख़्शिश	और रिज़्क़ है	इज़्ज़त वाला	जैसा कि

اَخْرَجَكَ	رَبُّكَ	مِنْۢ بَيْتِكَ	بِالْحَقِّ ۪	وَاِنَّ	فَرِيْقًا
निकाला आपको	आपके रब ने	आपके घर से	साथ हक़ के	और बेशक	एक गिरोह

مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ	لَكٰرِهُوْنَ ﴿5﴾ ۙ	يُجَادِلُوْنَكَ	فِى الْحَقِّ	بَعْدَ	مَا
मोमिनों में से	अलबत्ता नापसंद करने वाला था	वो झगड़ते थे आपसे	हक़ में	बाद	उसके जो

تَبَيَّنَ	كَاَنَّمَا	يُسَاقُوْنَ	اِلَى الْمَوْتِ	وَهُمْ	يَنْظُرُوْنَ ﴿6﴾ ؕ	وَاِذْ
वो वाज़ह हो गया था	गोया कि	वो हांके जा रहे थे	तरफ़ मौत के	और वो	वो देख रहे थे	और जब

يَعِدُكُمُ	اللّٰهُ	اِحْدَى	الطَّآئِفَتَيْنِ	اَنَّهَا	لَكُمْ	وَتَوَدُّوْنَ
वादा कर रहा था तुमसे	अल्लाह	एक का	दो गिरोहों में से	बेशक वो	तुम्हारे लिए है	और तुम चाहते थे

اَنَّ	غَيْرَ	ذَاتِ الشَّوْكَةِ	تَكُوْنُ	لَكُمْ	وَيُرِيْدُ	اللّٰهُ	اَنْ
बेशक	बग़ैर	हथियार वाला	हो जाए	तुम्हारे लिए	और चाहता है	अल्लाह	कि

يُّحِقَّ	الْحَقَّ	بِكَلِمٰتِهٖ	وَيَقْطَعَ	دَابِرَ	الْكٰفِرِيْنَ ﴿7﴾ ۙ	لِيُحِقَّ
वो साबित कर दे	हक़ को	अपने कलिमात से	और वो काट डाले	जड़	काफ़िरों की	ताकि वो साबित करदे

الْحَقَّ	وَيُبْطِلَ	الْبَاطِلَ	وَلَوْ	كَرِهَ	الْمُجْرِمُوْنَ ﴿8﴾ ۚ	اِذْ
हक़ को	और वो बातिल करदे	बातिल को	और अगरचे	नापसंद करें	मुजरिम लोग	जब

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

تَسْتَغِيْثُوْنَ	رَبَّكُمْ	فَاسْتَجَابَ	لَكُمْ	اَنِّيْ	مُمِدُّكُمْ
तुम फरियाद कर रे थे	अपने रब से	तो उसने (दुआ) क़ुबूल कर ली	तुम्हारी	कि बेशक मैं	मदद देने वाला हूं तुम्हें

بِاَلْفٍ	مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ	مُرْدِفِيْنَ ⑨	وَمَا	جَعَلَهُ	اللّٰهُ	اِلَّا
साथ एक हज़ार	फ़ररश्तों के	एक दूसरे के पीछे आने वाले	और नहीं	बनाया उसे	अल्लाह ने	मगर

بُشْرٰى	وَلِتَطْمَئِنَّ	بِهٖ	قُلُوْبُكُمْ ۚ	وَمَا	النَّصْرُ	اِلَّا
ख़ुशख़बरी	और ताकि मुत्मइन हो जाएं	साथ उसके	दिल तुम्हारे	और नहीं	मदद	मगर

ع 1 10 15

مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ	اِنَّ	اللّٰهَ	عَزِيْزٌ	حَكِيْمٌ ⑩ ع	اِذْ	يُغَشِّيْكُمُ
अल्लाह के पास से	बेशक	अल्लाह	बहुत ज़बरदस्त है	ख़ूब हिक्मत वाला है	जब	उसने ढांप दी तुम पर

النُّعَاسَ	اَمَنَةً	مِّنْهُ	وَيُنَزِّلُ	عَلَيْكُمْ	مِّنَ السَّمَآءِ	مَآءً
ऊंघ	अमन के लिए	उसकी तरफ़ से	और वो उतार रहा था	तुम पर	आसमान से	पानी

لِّيُطَهِّرَكُمْ	بِهٖ	وَيُذْهِبَ	عَنْكُمْ	رِجْزَ	الشَّيْطٰنِ	وَلِيَرْبِطَ
ताकि वो पाक कर दे तुम्हें	साथ उसके	और वो ले जाए	तुमसे	नजासत	शैतान की	और ताकि वो मज़बूत करदे

عَلٰى قُلُوْبِكُمْ	وَيُثَبِّتَ	بِهِ	الْاَقْدَامَ ⑪ ط	اِذْ	يُوْحِيْ	رَبُّكَ
तुम्हारे दिलों को	और वो जमादे	साथ उसके	क़दमों को	जब	वही कर रहा था	रब आपका

اِلَى الْمَلٰٓئِكَةِ	اَنِّيْ	مَعَكُمْ	فَثَبِّتُوا	الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا ؕ	سَاُلْقِيْ
तरफ़ फ़रिश्तों के	बेशक में	साथ हूं तुम्हारे	पस साबित रखो	उन्हें जो	ईमान लाए	अनक़रीब मैं डाल दुंगा

فِيْ قُلُوْبِ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوا	الرُّعْبَ	فَاضْرِبُوْا	فَوْقَ	الْاَعْنَاقِ
दिलों में	उनके जिन्होंने	कुफ़्र किया	रोब को	पस मारो	ऊपर	गर्दनों के

وَاضْرِبُوْا	مِنْهُمْ	كُلَّ	بَنَانٍ ⑫ ط	ذٰلِكَ	بِاَنَّهُمْ	شَآقُّوا	اللّٰهَ
और मारो	उनके	हर	पोर पर	ये	बवजह इसके कि उन्होंने	मुख़ालिफ़त की	अल्लाह की

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَ رَسُوْلَهٗ ۚ	وَمَنْ	يُّشَاقِقِ	اللّٰهَ	وَ رَسُوْلَهٗ	فَاِنَّ	اللّٰهَ	شَدِيْدُ
और उसके रसूल की	और जो कोई	मुख़ालिफ़त करेगा	अल्लाह की	और उसके रसूल की	तो बेशक	अल्लाह	सख़्त

الْعِقَابِ ⑬	ذٰلِكُمْ	فَذُوْقُوْهُ	وَ اَنَّ	لِلْكٰفِرِيْنَ	عَذَابَ	النَّارِ ⑭
सज़ा वाला है	ये है (सज़ा)	पस चखो उसे	और बेशक	काफ़िरों के लिए	अज़ाब है	आग का

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْٓا	اِذَا	لَقِيْتُمُ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	زَحْفًا
ऐ लोगो जो	ईमान लाए हो	जब	मुलाक़ात करो तुम	उनसे जिन्होंने	कुफ़्र किया	मैदाने जंग में

فَلَا	تُوَلُّوْهُمُ	الْاَدْبَارَ ⑮	وَمَنْ	يُّوَلِّهِمْ	يَوْمَئِذٍ	دُبُرَهٗٓ	اِلَّا
पस ना	तुम फेरो उनसे	पुश्तों को	और जो कोई	फेरेगा उनसे	उस दिन	पुश्त अपनी	सिवाए

مُتَحَرِّفًا	لِّقِتَالٍ	اَوْ	مُتَحَيِّزًا	اِلٰى فِئَةٍ	فَقَدْ	بَآءَ	بِغَضَبٍ
पैंतरा बदलने वाले के	जंग के लिए	या	पनाह लेने वाले के	तरफ़ एक गिरोह के	तो तहक़ीक़	वो पलटा	साथ ग़ज़ब के

مِّنَ اللّٰهِ	وَمَاْوٰىهُ	جَهَنَّمُ ؕ	وَبِئْسَ	الْمَصِيْرُ ⑯	فَلَمْ	تَقْتُلُوْهُمْ
अल्लाह की तरफ़ से	और ठिकाना उसका	जहन्नम है	और कितना बुरा है	ठिकाना	तो नहीं	तुमने क़त्ल किया उन्हें

وَلٰكِنَّ	اللّٰهَ	قَتَلَهُمْ ۪	وَمَا	رَمَيْتَ	اِذْ	رَمَيْتَ	وَلٰكِنَّ
और लेकिन	अल्लाह ने	क़त्ल किया उन्हें	और नहीं	फैंका आपने	जब	फैंका था आपने	और लेकिन

اللّٰهَ	رَمٰى ۚ	وَلِيُبْلِيَ	الْمُؤْمِنِيْنَ	مِنْهُ	بَلَآءً	حَسَنًا ؕ	اِنَّ	اللّٰهَ
अल्लाह ने	फैंका था	और ताकि वो आज़माए	मोमिनों को	अपनी तरफ़ से	आज़माइश	अच्छी से	बेशक	अल्लाह

سَمِيْعٌ	عَلِيْمٌ ⑰	ذٰلِكُمْ	وَ اَنَّ	اللّٰهَ	مُوْهِنُ	كَيْدِ	الْكٰفِرِيْنَ ⑱
ख़ूब सुनने वाला है	ख़ूब जानने वाला है	ये है	और बेशक	अल्लाह	कमज़ोर करने वाला है	चाल को	काफ़िरों की

اِنْ	تَسْتَفْتِحُوْا	فَقَدْ	جَآءَكُمُ	الْفَتْحُ ۚ	وَاِنْ	تَنْتَهُوْا	فَهُوَ
अगर	तुम फ़ैसला चाहते हो	तो तहक़ीक़	आ गया तुम्हारे पास	फ़ैसला	और अगर	तुम बाज़ आजाओ	तो वो

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

خَيْرٌ	لَّكُمْ ۚ	وَاِنْ	تَعُوْدُوْا	نَعُدْ ۚ	وَلَنْ	تُغْنِيَ	عَنْكُمْ
बेहतर है	तुम्हारे लिए	और अगर	तुम लौटोगे	हम भी लौटेंगे	और हरगिज़ ना	काम आएगा	तुम्हें

فِئَتُكُمْ	شَيْـًٔا	وَّلَوْ	كَثُرَتْ ۙ	وَاَنَّ	اللّٰهَ	مَعَ	الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿19﴾ ع	ع 2 9 16
गिरोह तुम्हारा	कुछ भी	और अगरचे	वो बकसरत हों	और बेशक	अल्लाह	साथ है	ईमान लाने वालों के	

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْٓا	اَطِيْعُوا	اللّٰهَ	وَرَسُوْلَهٗ	وَلَا	تَوَلَّوْا	عَنْهُ
ऐ लोगो जो	ईमान लाए हो	इताअत करो	अल्लाह की	और उसके रसूल की	और ना	तुम मुंह फेरो	उससे

وَاَنْتُمْ	تَسْمَعُوْنَ ﴿20﴾ ۚ	وَلَا	تَكُوْنُوْا	كَالَّذِيْنَ	قَالُوْا	سَمِعْنَا	وَهُمْ
जबकि तुम	तुम सुन रहे हो	और ना	तुम हो जाओ	उनकी तरह जिन्होंने	कहा	सुना हमने	हालांकि वो

لَا يَسْمَعُوْنَ ﴿21﴾	اِنَّ	شَرَّ	الدَّوَآبِّ	عِنْدَ اللّٰهِ	الصُّمُّ	الْبُكْمُ	الَّذِيْنَ
नहीं वो सुनते	बेशक	बदतरीन	जानदार	अल्लाह के नज़्दीक	वो बेहरे	गूंगे हैं	जो

لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿22﴾	وَلَوْ	عَلِمَ	اللّٰهُ	فِيْهِمْ	خَيْرًا	لَّاَسْمَعَهُمْ ؕ	وَلَوْ
नहीं वो अक़्ल से काम लेते	और अगर	जान लेता	अल्लाह	उनमें	कोई भलाई	अलबत्ता वो सुनवा देता उन्हें	और अगर

اَسْمَعَهُمْ	لَتَوَلَّوْا	وَّهُمْ	مُّعْرِضُوْنَ ﴿23﴾	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ	اٰمَنُوا
वो सुनवा देता उन्हें	यक़ीनन वो मुंह फेर जाते	और वो हैं ही	ऐराज़ करने वाले	ऐ लोगो जो	ईमान लाए हो

اسْتَجِيْبُوْا	لِلّٰهِ	وَلِلرَّسُوْلِ	اِذَا	دَعَاكُمْ	لِمَا	يُحْيِيْكُمْ ۚ
क़ुबूल कर लो (हुक्म)	अल्लाह का	और रसूल का	जब	वो पुकारे तुम्हें	उसके लिए जो	ज़िंदगी बख़्शता है तुम्हें

وَاعْلَمُوْٓا	اَنَّ	اللّٰهَ	يَحُوْلُ	بَيْنَ	الْمَرْءِ	وَقَلْبِهٖ	وَاَنَّهٗٓ	اِلَيْهِ
और जान लो	बेशक	अल्लाह	वो हाइल होता है	दर्मियान	आदमी	और उसके दिल के	और बेशक वो	तरफ़ उसी के

تُحْشَرُوْنَ ﴿24﴾	وَاتَّقُوْا	فِتْنَةً	لَّا تُصِيْبَنَّ	الَّذِيْنَ	ظَلَمُوْا	مِنْكُمْ
तुम इकट्ठे किए जाओगे	और डरो	उस फ़ितने से	जो हरगिज़ ना पहुंचेगा	उन्हें जिन्होंने	ज़ुल्म किया	तुम में से

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

خَآصَّةً ۚ	وَاعْلَمُوْٓا	اَنَّ	اللّٰهَ	شَدِيْدُ	الْعِقَابِ ﴿25﴾	وَاذْكُرُوْٓا	اِذْ
खासकर	और जान लो	बेशक	अल्लाह	सख़्त	सज़ा वाला है	और याद करो	जब

اَنْتُمْ	قَلِيْلٌ	مُّسْتَضْعَفُوْنَ	فِى الْاَرْضِ	تَخَافُوْنَ	اَنْ	يَّتَخَطَّفَكُمُ
तुम	थोड़े थे	कमज़ोर समझे जाते थे	ज़मीन में	तुम डरते थे	कि	उचक लेंगे तुम्हें

النَّاسُ	فَاٰوٰىكُمْ	وَاَيَّدَكُمْ	بِنَصْرِهٖ	وَرَزَقَكُمْ	مِّنَ الطَّيِّبٰتِ
लोग	फिर उसने ठिकाना दिया तुम्हें	और उसने ताईद की तुम्हारी	अपनी मदद से	और उसने रिज़्क़ दिया तुम्हें	पाकीज़ा चीज़ों से

لَعَلَّكُمْ	تَشْكُرُوْنَ ﴿26﴾	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	لَا تَخُوْنُوا	اللّٰهَ	وَالرَّسُوْلَ
ताकि तुम	तुम शुक्र अदा करो	ऐ लोगो जो	ईमान लाए हो	ना तुम ख़्यानत करो	अल्लाह	और उसके रसूल की

وَتَخُوْنُوْٓا	اَمٰنٰتِكُمْ	وَاَنْتُمْ	تَعْلَمُوْنَ ﴿27﴾	وَاعْلَمُوْٓا	اَنَّمَآ	اَمْوَالُكُمْ
और (ना) तुम ख़्यानत करो	अपनी अमानतों में	जबकि तुम	तुम जानते हो	और जान लो	बेशक	माल तुम्हारे

وَاَوْلَادُكُمْ	فِتْنَةٌ ۙ	وَّاَنَّ	اللّٰهَ	عِنْدَهٗٓ	اَجْرٌ	عَظِيْمٌ ﴿28﴾ ع	يٰٓاَيُّهَا
और औलाद तुम्हारी	आज़माइश हैं	और बेशक	अल्लाह	उसके पास	अजर है	बहुत बड़ा	ऐ

ع 3 9 17

الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْٓا	اِنْ	تَتَّقُوا	اللّٰهَ	يَجْعَلْ	لَّكُمْ	فُرْقَانًا	وَّيُكَفِّرْ
लोगो जो	ईमान लाए हो	अगर	तुम डरोगे	अल्लाह से	वो बना देगा	तुम्हारे लिए	फ़ुरक़ान	और वो दूर कर देगा

عَنْكُمْ	سَيِّاٰتِكُمْ	وَيَغْفِرْ	لَكُمْ ۗ	وَاللّٰهُ	ذُو الْفَضْلِ	الْعَظِيْمِ ﴿29﴾
तुम से	बुराइयां तुम्हारी	और बख़्श देगा	तुम्हें	और अल्लाह	फ़ज़्ल वाला है	बहुत बड़े

وَاِذْ	يَمْكُرُ	بِكَ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	لِيُثْبِتُوْكَ	اَوْ	يَقْتُلُوْكَ
और जब	चालें चल रहे थे	साथ आपके	वो जिन्होंने	कुफ़्र किया	ताकि वो क़ैद करलें आपको	या	वो क़त्ल करदें आपको

اَوْ	يُخْرِجُوْكَ ۗ	وَيَمْكُرُوْنَ	وَيَمْكُرُ	اللّٰهُ ۗ	وَاللّٰهُ	خَيْرُ
या	वो निकाल दें आपको	और वो चालें चल रहे थे	और तदबीर कर रहा था	अल्लाह	और अल्लाह	बेहतर है

© AL-RIDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

الْمٰكِرِيْنَ ﴿30﴾	وَاِذَا	تُتْلٰى	عَلَيْهِمْ	اٰيٰتُنَا	قَالُوْا	قَدْ	سَمِعْنَا
सब तदबीर करने वालों से	और जब	पढ़ी जाती हैं	उन पर	आयात हमारी	वो कहते हैं	तहक़ीक़	सुन लिया हमने

لَوْ	نَشَآءُ	لَقُلْنَا	مِثْلَ	هٰذَآ ۙ	اِنْ	هٰذَآ	اِلَّآ	اَسَاطِيْرُ	الْاَوَّلِيْنَ ﴿31﴾
अगर	हम चाहें	अलबत्ता कह लें हम	मानिंद	इसी के	नहीं	ये	मगर	कहानियां	पहलों की

وَاِذْ	قَالُوا	اللّٰهُمَّ	اِنْ	كَانَ	هٰذَا	هُوَ	الْحَقَّ	مِنْ عِنْدِكَ
और जब	उन्होंने कहा	ऐ अल्लाह	अगर	है	ये	वो ही	जो हक़ है	तेरे पास से

فَاَمْطِرْ	عَلَيْنَا	حِجَارَةً	مِّنَ السَّمَآءِ	اَوِ	ائْتِنَا	بِعَذَابٍ	اَلِيْمٍ ﴿32﴾
तो बरसा	हम पर	पत्थर	आसमान से	या	ले आ हम पर	अज़ाब	दर्दनाक

وَمَا	كَانَ	اللّٰهُ	لِيُعَذِّبَهُمْ	وَاَنْتَ	فِيْهِمْ ؕ	وَمَا	كَانَ	اللّٰهُ
और नहीं	है	अल्लाह	कि वो अज़ाब दे उन्हें	जबकि आप	उनमें (मौजूद हों)	और नहीं	है	अल्लाह

مُعَذِّبَهُمْ	وَهُمْ	يَسْتَغْفِرُوْنَ ﴿33﴾	وَمَا	لَهُمْ	اَلَّا	يُعَذِّبَهُمُ
अज़ाब देने वाला है उन्हें	जबकि वो	वो इस्तग़फ़ार कर रहे हों	और क्या है	उन्हें	कि ना	अज़ाब देगा उन्हें

اللّٰهُ	وَهُمْ	يَصُدُّوْنَ	عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ	وَمَا	كَانُوْٓا	اَوْلِيَآءَهٗ ؕ
अल्लाह	हालांकि वो	वो रोकते हैं	मस्जिदे हराम से	हालांकि नहीं	हैं वो	मुतवल्ली उसके

اِنْ	اَوْلِيَآؤُهٗ	اِلَّا	الْمُتَّقُوْنَ	وَلٰكِنَّ	اَكْثَرَهُمْ	لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿34﴾	وَمَا
नहीं	मुतवल्ली उसके	मगर	मुत्तक़ी लोग	और लेकिन	अक्सर उनके	नहीं वो इल्म रखते	और ना

كَانَ	صَلَاتُهُمْ	عِنْدَ	الْبَيْتِ	اِلَّا	مُكَآءً	وَّتَصْدِيَةً ؕ	فَذُوْقُوا
थी	नमाज़ उनकी	पास	बैतुल्लाह के	मगर	सीटियां बजाना	और तालियां बजाना	पस चखो

الْعَذَابَ	بِمَا	كُنْتُمْ	تَكْفُرُوْنَ ﴿35﴾	اِنَّ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا
अज़ाब	बवजह उसक जो	थे तुम	तुम कुफ़्र करते	बेशक	वो जिन्होंने	कुफ़्र किया

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

يُنْفِقُوْنَ	اَمْوَالَهُمْ	لِيَصُدُّوْا	عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ	فَسَيُنْفِقُوْنَهَا	ثُمَّ
वो ख़र्च करते हैं	अपने मालों को	ताकि वो रोकें	अल्लाह के रास्ते से	पस अनक़रीब वो ख़र्च करेंगे उसे	फिर

تَكُوْنُ	عَلَيْهِمْ	حَسْرَةً	ثُمَّ	يُغْلَبُوْنَ ؕ	وَالَّذِيْنَ	كَفَرُوْٓا	اِلٰى
वो हो जाएगा	उन पर	हसरत (का सबब)	फिर	वो मग़लूब किए जाऐंगे	और वो जिन्होंने	कुफ़्र किया	तरफ़

جَهَنَّمَ	يُحْشَرُوْنَ ﴿36﴾ لَا	لِيَمِيْزَ	اللّٰهُ	الْخَبِيْثَ	مِنَ الطَّيِّبِ	وَيَجْعَلَ
जहन्नम के	वो इकट्ठे किए जाऐंगे	ताकि जुदा करदे	अल्लाह	नापाक को	पाक से	और वो कर दे

الْخَبِيْثَ	بَعْضَهٗ	عَلٰى بَعْضٍ	فَيَرْكُمَهٗ	جَمِيْعًا	فَيَجْعَلَهٗ
नापाक को	उसके बाज़ को	बाज़ पर	फिर वो ढेर लगा दे उसका	सबका	फिर वो डाल दे उसे

ع 4 9 18

فِيْ جَهَنَّمَ ؕ	اُولٰٓئِكَ	هُمُ	الْخٰسِرُوْنَ ﴿37﴾ ع	قُلْ	لِّلَّذِيْنَ	كَفَرُوْٓا	اِنْ
जहन्नम में	यही लोग हैं	वो	जो ख़सारा पाने वाले हैं	कह दीजिए	उनके लिए जिन्होंने	कुफ़्र किया	अगर

يَّنْتَهُوْا	يُغْفَرْ	لَهُمْ	مَّا	قَدْ	سَلَفَ ۚ	وَاِنْ	يَّعُوْدُوْا
वो बाज़ आजाऐं	बख़्श दिया जाएगा	उनके लिए	जो	तहक़ीक़	पहले हो गया	और अगर	वो पलटेंगे

فَقَدْ	مَضَتْ	سُنَّتُ	الْاَوَّلِيْنَ ﴿38﴾	وَقَاتِلُوْهُمْ	حَتّٰى	لَا تَكُوْنَ
तो तहक़ीक़	गुज़र चुकी	सुन्नत (तरीक़ा)	पहलों की	और जंग करो उनसे	यहां तक कि	ना रहे

فِتْنَةٌ	وَّيَكُوْنَ	الدِّيْنُ	كُلُّهٗ	لِلّٰهِ ۚ	فَاِنِ	انْتَهَوْا	فَاِنَّ
कोई फ़ितना	और हो जाए	दीन	सारे का सारा	अल्लाह के लिए	फिर अगर	वो बाज़ आजाऐं	तो बेशक

اللّٰهَ	بِمَا	يَعْمَلُوْنَ	بَصِيْرٌ ﴿39﴾	وَاِنْ	تَوَلَّوْا	فَاعْلَمُوْٓا	اَنَّ
अल्लाह	उसे जो	वो अमल करते हैं	ख़ूब देखने वाला है	और अगर	वो मुंह मोड़ जाऐं	तो जान लो	बेशक

اللّٰهَ	مَوْلٰىكُمْ ؕ	نِعْمَ	الْمَوْلٰى	وَنِعْمَ	النَّصِيْرُ ﴿40﴾
अल्लाह	मौला है तुम्हारा	कितना अच्छा है	मौला	और कितना अच्छा है	मददगार

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION